OCHORUS ORIGINALS

1

जड़ें जमाए

रोपे गए: परमेश्वर को जानना, यीशु को ग्रहण करना, और बढ़ना सीखना



Ochorus

जड़ें जमाए — युवाओं के लिये परमेश्वर के साथ 30 दिन — पुस्तक 1

रोपे गए: परमेश्वर को जानना, यीशु को ग्रहण करना, और बढ़ना सीखना

Ochorus Originals

पहली बार 2026 में प्रकाशित।

OCHORUS

Ochorus के बारे में

मसीही विश्वास की महान क्लासिक कृतियों को दुनिया भर के चर्च के लिए मुफ़्त उपलब्ध कराना — उनकी अपनी भाषा में, परमेश्वर की महिमा के लिए।

Ochorus एक मसीही सेवकाई है, जिसके केंद्र विक्टोरिया (कनाडा) और कम्पाला (युगांडा) में हैं। 2021 से हम अतीत की महान मसीही पुस्तकें खोजते हैं, आज के पाठकों के लिए उनका सावधानी से संपादन करते हैं, और उन्हें मुफ़्त देते हैं — पढ़ने के लिए भी मुफ़्त और रखने के लिए भी मुफ़्त।

हम केवल एक वेबसाइट नहीं हैं। युगांडा में छपी पुस्तकें पूरे पूर्वी अफ़्रीका में सीधे लोगों के हाथों में पहुँचाई जाती हैं — पास्टरों के सम्मेलनों में, और उन कलीसियाओं, विद्यालयों और जेलों में जहाँ हमें सेवा के लिए बुलाया जाता है।

ochorus.com पर पढ़ना जारी रखें

- सैकड़ों क्लासिक पुस्तकें, उपदेश और जीवनियाँ — निःशुल्क, बिना विज्ञापन और बिना खाते के।
- अनेक भाषाओं में पुस्तकें — अंग्रेज़ी और स्वाहिली से लेकर अरबी और हिंदी तक।
- पढ़ने की योजनाएँ, हाइलाइट और नोट्स जो एक डिवाइस से दूसरे डिवाइस तक आपके साथ चलते हैं।
- ऊँची आवाज़ में सुनें, या किसी पुस्तक को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेज लें।
- इस जैसी निःशुल्क डाउनलोड। इन्हें खुलकर बाँटें।

"तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।"

मत्ती 10:8

विषय-सूची

इस पुस्तक के बारे में — 6

परिचय: 'जड़ें जमाए' में स्वागत है — 7

दिन 1 — रोपा गया — 10

दिन 2 — आदि में — 12

दिन 3 — तारों से भी बड़ा — 14

दिन 4 — पवित्र, पवित्र, पवित्र — 16

दिन 5 — परमेश्वर प्रेम है — 18

दिन 6 — वह परमेश्वर जो कभी नहीं बदलता — 20

दिन 7 — कुछ गड़बड़ हो गई — 22

दिन 8 — अंधकार में एक प्रतिज्ञा — 24

दिन 9 — परमेश्वर हमारे साथ — 26

दिन 10 — क्रूस — 28

दिन 11 — खाली कब्र — 30

दिन 12 — उपहार को ग्रहण करना — 32

दिन 13 — उद्देश्य से रचा गया — 34

दिन 14 — परमेश्वर की सन्तान — 36

दिन 15 — क्षमा किया गया 38
दिन 16 — बिल्कुल नया 40
दिन 17 — कभी अकेले नहीं 42
दिन 18 — भीतर रहनेवाला सहायक 44
दिन 19 — परमेश्वर सुन रहा है 46
दिन 20 — हमारे पिता 48
दिन 21 — प्रतिदिन की रोटी 50
दिन 22 — परमेश्वर से क्षमा माँगना 52
दिन 23 — धन्यवाद, परमेश्वर 54
दिन 24 — जब परमेश्वर कहता है "ठहर जा" 56
दिन 25 — मेरे पैरों के लिये एक दीपक 58
दिन 26 — परमेश्वर के वचन को छिपाना 60
दिन 27 — केवल सुनो मत — करो भी 62
दिन 28 — साथ मिलकर बढ़ना 64
दिन 29 — प्रभु के लिये गाओ 66
दिन 30 — जल के किनारे एक वृक्ष 68
निष्कर्ष: तुम रोपे जा चुके हो — बढ़ते रहो 70

इस पुस्तक के बारे में

Rooted is an original Ochorus devotional series for readers aged 9 to 12, and this is its first book. Its picture is a tree: a tree with deep roots keeps standing when the storms come, and Colossians 2:7 asks the same of us, to be rooted and built up in Christ. Six books of thirty days each walk that picture from the roots to the fruit.

Book 1 lays the foundation over five weeks. The first asks who God is: the Creator who names every star, holy and full of love, and never changing. The second tells the best news ever, from the garden to the cross and the empty tomb, and ends with a clear, gentle invitation to trust Jesus. The third shows a young reader who they are in Christ: made on purpose, a child of God, forgiven, never alone. The fourth teaches prayer through the Lord's Prayer, and the fifth shows how the Bible, obeying, church and worship make the roots grow deep.

Every day follows the same short pattern, a few minutes long: a Scripture from the Berean Standard Bible, a teaching told with a story or a picture from everyday life, a question to think about, one thing to try that day, and a prayer to pray. It is written to be read alone by a young reader, and it works just as well read aloud at bedtime or around the table, where the questions make good conversation starters.

परिचय: 'जड़ें जमाए' में स्वागत है

क्या तुम ने कभी बगीचे से कोई खरपतवार उखाड़ने की कोशिश की है? कुछ तो एक ही हल्के झटके में निकल आते हैं। पर कुछ टस से मस नहीं होते। तुम खींचते जाते हो, खींचते जाते हो, जब तक तुम्हारा मुँह लाल न पड़ जाए, और वह खरपतवार वहीं जमा रहता है, मानो तुम पर हँस रहा हो। फर्क क्या है? **जड़ें।** जिस पौधे की जड़ें गहरी होती हैं, वही थामे रहता है।

अब एक विशाल बलूत के पेड़ के बारे में सोचो। शायद वह सौ वर्ष पुराना हो। उस ने आँधी-तूफ़ान, बर्फ़ के तूफ़ान, सूखी गर्मियाँ और गरजती हवाएँ झेली हैं, फिर भी वह खड़ा है। उसका रहस्य ज़मीन के नीचे छिपा है, जहाँ उसकी जड़ें चौड़ाई में फैलती हैं और गहराई में उतरती जाती हैं।

परमेश्वर चाहता है कि तुम्हारा जीवन उसी पेड़ के समान हो। बाइबल कहती है:

> *"इसलिए जैसे तुम ने प्रभु मसीह यीशु को ग्रहण किया, वैसे ही उसी में चलते रहो, उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ, और जैसा तुम्हें सिखाया गया वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और धन्यवाद करते हुए बढ़ते जाओ।"*
> *— कुलुस्सियों 2:6–7 (BSB)*

इसी से इस पुस्तक को उसका नाम मिला है। **'जड़ें जमाए'** इस बारे में है कि परमेश्वर में गहरे बढ़ते जाओ, ताकि जब कठिन दिन आएँ (और वे आते ही हैं, तब भी जब तुम 9, 10, 11 या 12 वर्ष के हो), तब तुम खड़े रहो।

इस पुस्तक में क्या है

यह **पुस्तक 1** है, और यह ठीक आरम्भ से ही शुरू होती है: जड़ें। अगले 30 दिनों में तुम यह खोज पाओगे:

- **सप्ताह 1 — परमेश्वर कौन है?** परमेश्वर कैसा है: तारों से भी बड़ा, पूरी तरह पवित्र और प्रेम से भरा हुआ।
- **सप्ताह 2 — अब तक का सबसे अच्छा समाचार।** संसार में क्या गड़बड़ हुई, और यीशु उसे ठीक करने के लिये कैसे आए।
- **सप्ताह 3 — मसीह में मैं कौन हूँ।** परमेश्वर *तुम्हारे* बारे में क्या कहता है।
- **सप्ताह 4 — परमेश्वर से बातें करना।** प्रार्थना कैसे करें, और परमेश्वर तुम्हारी बात सुनना क्यों चाहता है।
- **सप्ताह 5 — गहरे बढ़ना।** बाइबल, परमेश्वर की आज्ञा मानना, कलीसिया और आराधना किस प्रकार तुम्हारी जड़ों को बढ़ने में सहायता देते हैं।

हर दिन कैसे चलता है

हर दिन लगभग पाँच से दस मिनट लेता है और उसके पाँच भाग होते हैं:

1. **वचन।** बाइबल का एक छोटा-सा अंश। उसे धीरे-धीरे पढ़ो, और शायद दो बार पढ़ो।
2. **शिक्षा।** कुछ मिनट का पढ़ना, जो समझाता है कि वचन का क्या अर्थ है और उसका तुम्हारे जीवन से क्या नाता है।
3. **इस पर सोचो।** गहराई से सोचने में सहायता करने वाला एक प्रश्न। तुम इस पर चुपचाप सोच सकते हो, अपना उत्तर लिख सकते हो या किसी के साथ इस पर बात कर सकते हो।
4. **यह करके देखो।** उस दिन करने के लिये एक छोटा-सा काम, ताकि तुम ने जो सीखा उसे करके दिखा सको।
5. **प्रार्थना।** एक प्रार्थना जो तुम परमेश्वर से कर सकते हो। अपने शब्द जोड़ने में झिझको मत!

बढ़ने के लिये सुझाव

- **एक समय चुन लो।** सुबह, स्कूल के बाद या सोने से ठीक पहले। जड़ें तब सबसे अच्छी बढ़ती हैं जब उन्हें एक ही समय पर एक-सा जल मिले।

- **बाइबल पास रखो।** वचन को अपनी ही बाइबल में देखना एक बढ़िया आदत है। यदि तुम्हारे पास बाइबल न हो, तो माता-पिता से या कलीसिया में किसी से माँग लो।
- **एक कॉपी रख लो।** अपने उत्तर, अपनी प्रार्थनाएँ और जो कुछ परमेश्वर तुम्हें दिखाए, वह लिख लो। बाद में उसे पलटकर देखना तुम्हें बहुत भाएगा।
- **किसी के साथ पढ़ो।** माता या पिता, दादा या दादी, भाई या बहन, या कोई मित्र। साथ मिलकर बढ़ने में अधिक आनन्द है।
- **कोई दिन छूट गया? कोई बात नहीं।** यह कोई परीक्षा नहीं है। बस जहाँ छोड़ा था वहीं से फिर शुरू कर लो। परमेश्वर हिसाब नहीं रख रहा। वह खुश है कि तुम यहाँ हो।

एक बात और: यह पुस्तक कोई जादू नहीं है। इसे पढ़ने भर से तुम नहीं बढ़ोगे। **परमेश्वर** ही चीज़ों को बढ़ाता है। पर जब तुम हर दिन उसके साथ समय बिताते हो, तब तुम उस पेड़ के समान हो जो नदी के किनारे लगाया गया है, और ठीक वही सोख लेता है जिसकी उसे आवश्यकता है।

तो चलो शुरू करें। तुम्हारी जड़ें प्रतीक्षा कर रही हैं।

माता-पिता, दादा-दादी और अगुवों के लिये

'जड़ें जमाए' 9 से 12 वर्ष के पाठकों के लिये लिखी गई है कि वे इसे स्वयं पढ़ें, पर यह साथ मिलकर ऊँचे स्वर में पढ़ने पर भी उतनी ही अच्छी लगती है। "इस पर सोचो" वाले प्रश्न भोजन की मेज़ पर या सोने के समय अच्छी बातचीत छेड़ने का काम करते हैं। हर दिन का पवित्रशास्त्र बेरियन स्टैंडर्ड बाइबल से लिया गया है। पुस्तक 1 नींव रखती है: परमेश्वर कौन है, यीशु मसीह का सुसमाचार, उसमें बालक की पहचान, प्रार्थना और पवित्रशास्त्र तथा कलीसिया का स्थान। दिन 12 में मसीह पर भरोसा करने का एक स्पष्ट, कोमल निमंत्रण है। यदि तुम्हारा बच्चा इसका उत्तर देता है, तो हम तुम्हें प्रोत्साहित करते हैं कि उसके साथ इस पर बात करो। शायद यह तुम्हारे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बातचीत हो।

दिन 1 — रोपा गया

"इसलिए जैसे तुम ने प्रभु मसीह यीशु को ग्रहण किया, वैसे ही उसी में चलते रहो, उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ, और जैसा तुम्हें सिखाया गया वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ, और धन्यवाद करते हुए बढ़ते जाओ।"
— कुलुस्सियों 2:6–7 (BSB)

एक भयंकर तूफ़ान के अगली सुबह एक बड़े पेड़ की कल्पना करो। सारी रात हवा गरजती रही। डालियाँ टूटीं। पत्ते आँगन भर उड़ते रहे। शायद कोई बाड़ भी गिर पड़ी। पर वह पेड़ अब भी खड़ा है। क्यों? किसी ऐसी चीज़ के कारण जिसे तुम देख भी नहीं सकते: उसकी **जड़ों** के कारण।

जड़ें दो बड़े काम करती हैं। पहला, वे **थामे रहती हैं**। वे ज़मीन को इतनी कसकर पकड़ती हैं कि तेज़ हवाएँ भी पेड़ को गिरा नहीं पातीं। दूसरा, वे **पीती हैं**। जड़ें मिट्टी से जल और भोजन सोख लेती हैं, ताकि पूरा पेड़ ऊँचा और मज़बूत बढ़ सके। जिस पेड़ की जड़ें उथली होती हैं वह पहले ही बड़े तूफ़ान में गिर जाता है और पहली ही तेज़ गर्मी में सूख जाता है। जिस पेड़ की जड़ें गहरी होती हैं वह वर्षों-वर्ष टिका रहता है।

जब पौलुस ने कुलुस्से नामक नगर के मसीहियों को यह पत्र लिखा, तब उस ने यही चित्र इस्तेमाल किया। उस ने उन से कहा कि "उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ।" *उसी* का अर्थ है यीशु। पौलुस कह रहा था: *अपनी जड़ें यीशु में गहरी उतार दो। उसे थामे रहो। उससे पीते रहो। वही तुम्हारे बल का स्रोत बने।*

वचन के पहले भाग पर भी ध्यान दो: "जैसे तुम ने प्रभु मसीह यीशु को ग्रहण किया।" जड़ें उगाने से पहले पेड़ को **रोपा** जाना ज़रूरी है। हमारे साथ भी यही सच है। हम यीशु पर भरोसा करके परमेश्वर के परिवार में रोपे जाते हैं, और अगले सप्ताह तुम यह सब सीखोगे कि ऐसा कैसे होता है। एक बार रोपे जाने के बाद बढ़ना शुरू होता है।

और यह रही अच्छी बात: जड़ें एक ही बड़ी छलाँग में नहीं बढ़तीं। वे हर दिन थोड़ा-थोड़ा बढ़ती हैं, चुपचाप, ज़मीन के नीचे, जब कोई देख भी नहीं रहा होता। इन 30 दिनों का उद्देश्य यही है। जब भी तुम परमेश्वर का वचन पढ़ते हो, उस पर सोचते हो और उससे बात करते हो, तब तुम्हारी जड़ें थोड़ी और गहरी उतर जाती हैं।

पौलुस यह भी कहता है कि जड़ पकड़ा हुआ व्यक्ति "धन्यवाद करते हुए बढ़ता जाता" है। जब तुम सचमुच जान लेते हो कि परमेश्वर कितना भला है, तब तुम बिना *धन्यवाद!* कहे रह ही नहीं पाते।

तूफ़ान तो आएँगे। स्कूल में कठिन दिन होंगे, घर पर उदास दिन होंगे, और डरावने दिन जब तुम न जान पाओ कि आगे क्या होगा। पर जड़ पकड़े हुए पेड़ को हवा से डरने की ज़रूरत नहीं।

चलो बढ़ना शुरू करें।

इस पर सोचो: तुम्हारे उम्र के किसी व्यक्ति के जीवन में "यीशु में जड़ पकड़ना" कैसा दिख सकता है?

यह करके देखो: अपने घर के पास कोई पेड़ ढूँढ़ो, या उसका कोई चित्र। इस महीने जब भी तुम उसे देखो, अपने आप को याद दिलाओ: *मैं जड़ें उगा रहा हूँ।*

हे परमेश्वर, इस नई शुरुआत के लिये तेरा धन्यवाद। इन 30 दिनों में कृपया मेरी जड़ों को यीशु में गहरा उगने में सहायता दे। जब बातें कठिन हों तब तुझे थामे रहने में और हर दिन तुझ से सीखने में मेरी सहायता कर। मुझे इतना भर दे कि मैं धन्यवाद से उमड़ पड़ूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 2 — आदि में

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।"
— उत्पत्ति 1:1 (BSB)

क्या तुम ने कभी ब्लॉक (ईंट-नुमा टुकड़ों) से कुछ अद्भुत बनाया है? शायद कोई किला, कोई अंतरिक्ष-यान या कोई पूरा नगर। यह मज़ेदार होता है। पर ज़रा सोचो: कुछ भी बनाने से पहले तुम्हें ब्लॉक चाहिए थे। तुम ने ब्लॉक नहीं बनाए। तुम ने बस उन्हें जोड़ा।

परमेश्वर अलग है। जब परमेश्वर ने संसार बनाया, तब उस ने ब्लॉकों के डिब्बे से शुरुआत नहीं की। उस ने **बिल्कुल कुछ भी न होने** से शुरुआत की। न मिट्टी, न जल, न उजियाला, न आकाश। केवल परमेश्वर। और फिर परमेश्वर बोला, और सब कुछ शुरू हो गया।

बाइबल के पहले चार शब्द फिर से पढ़ो: "आदि में परमेश्वर..." आदि होने से पहले भी परमेश्वर वहाँ था। उसका कोई जन्मदिन नहीं। उसे किसी ने नहीं बनाया। वह सदा से है, और सदा रहेगा। यह हमारे दिमाग़ के लिये समझना कठिन है! जो कुछ हम जानते हैं उस सब का एक आरम्भ है: हर व्यक्ति, हर पिल्ला, हर पेड़। पर परमेश्वर का न आरम्भ है और न अंत।

अब देखो उस ने क्या बनाया: "आकाश और पृथ्वी।" इसका अर्थ है **सब कुछ**। सूरज, चाँद और हर तारा। महासागर और पहाड़। जिराफ़ और जेलीफ़िश और गुनगुनाती चिड़ियाँ। बर्फ़ के फूल, जिनमें कोई भी दो एक जैसे नहीं। बारिश की सुगन्ध। नारंगी रंग। यह सब कुछ परमेश्वर की कल्पना से निकला।

और यह रही सबसे अच्छी बात। बाद में उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया, और उन्हें अपने ही स्वरूप में बनाया। उस ने जो कुछ बनाया, उस सब में से केवल मनुष्य ही ऐसे बने हैं जो उसे जान सकें, उससे बात कर सकें और बदले में उससे प्रेम कर सकें।

इसलिए जब तुम किसी डूबते सूरज को, या किसी आँधी-तूफ़ान को, या टुकड़ा ढोती किसी नन्ही चींटी को देखो, तब याद रखो: किसी ने यह बनाया है। जो कुछ तुम देखते हो वह कोई संयोग नहीं। और जिस ने यह सब बनाया, उसी ने **तुम्हें** भी बनाया।

यदि परमेश्वर इतना महान है कि कुछ भी न होने से सब कुछ बना दे, तो क्या उसके लिये कोई बात कठिन है?

इस पर सोचो: परमेश्वर ने जो कुछ बनाया, उसमें से तुम्हारी सबसे प्रिय चीज़ कौन-सी है? वह तुम्हें बताती है कि परमेश्वर कैसा है?

यह करके देखो: बाहर जाओ (या खिड़की से बाहर देखो) और परमेश्वर की बनाई पाँच चीज़ें ढूँढ़ो। हर एक के लिये उसका नाम लेकर धन्यवाद करो।

हे परमेश्वर, किसी और चीज़ के होने से पहले भी तू वहाँ था। तू ने आकाश और पृथ्वी और उनमें की सब वस्तुएँ बनाईं, और मुझे भी बनाया। इस अद्भुत संसार के लिये तेरा धन्यवाद। जब मैं तेरी सृष्टि देखूँ, तब मुझे याद दिला कि तू कितना महान है। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 3 — तारों से भी बड़ा

"अपनी आँखें ऊपर उठाकर देखो: इन सब को किस ने सृजा? वह इनकी सेना को गिन-गिनकर निकाल लाता है; वह उन सब को नाम ले-लेकर बुलाता है। उसके बड़े सामर्थ्य और प्रबल शक्ति के कारण उनमें से एक भी नहीं खोता।"
— यशायाह 40:26 (BSB)

किसी साफ़ रात में, शहर की रोशनियों से दूर, तुम ऊपर देखकर हज़ारों तारे देख सकते हो। पर वह तो उनका बहुत ही छोटा-सा अंश है। वैज्ञानिकों का मानना है कि ब्रह्मांड में तारे उससे भी अधिक हैं जितने पृथ्वी के हर समुद्र-तट की रेत के कण हैं। यह इतनी बड़ी संख्या है कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

अब यशायाह 40:26 फिर से पढ़ो। परमेश्वर केवल यही नहीं जानता कि कितने तारे हैं। वह "उन सब को नाम ले-लेकर बुलाता है।" हर एक को! परमेश्वर ने कभी कोई तारा नहीं भुलाया, कभी किसी को खोया नहीं, और कभी किसी को दूसरे के साथ नहीं मिलाया। "उनमें से एक भी नहीं खोता।"

यह हमें बताता है कि परमेश्वर कितना **बड़ा** है। वह आकाश से भी बड़ा है, सूरज से भी बलवान है, और अब तक हुए हर वैज्ञानिक से भी बुद्धिमान है।

पर यहाँ एक अचरज की बात है। यशायाह ने ये शब्द केवल लोगों को प्रभावित करने के लिये नहीं लिखे। उस ने ये उन लोगों के लिये लिखे जो अपने आप को भुलाया हुआ महसूस कर रहे थे। परमेश्वर के लोग कठिन समय से गुज़र रहे थे, और वे कह रहे थे, "परमेश्वर हमें नहीं देखता। हमारे साथ जो हो, उसकी उसे कोई परवाह नहीं।" (तुम इसे ठीक अगले ही वचन, यशायाह 40:27 में पढ़ सकते हो।)

इसलिए परमेश्वर ने मानो कहा: *ऊपर देखो। वे सब तारे देख रहे हो? मैं उनमें से हर एक को नाम लेकर जानता हूँ। क्या तुम सचमुच सोचते हो कि मैं तुम्हें भूल सकता हूँ?*

कभी-कभी हम सोचते हैं कि परमेश्वर इतना बड़ा है कि हमें देख ही नहीं सकता। अरबों लोगों और एक पूरे ब्रह्मांड को सँभालते हुए, वह भला मेरी कल की परीक्षा या मेरे उस मित्र की परवाह क्यों करेगा जो मुझ से बुरा बर्ताव कर रहा है? पर परमेश्वर की महानता यह कारण नहीं कि वह तुम्हारी परवाह *नहीं कर सकता*। यही वह कारण है कि वह परवाह *कर सकता* है। जो परमेश्वर हर तारे का हिसाब रख सकता है, उसे तुम्हारा हिसाब रखने में कोई कठिनाई नहीं।

तुम भीड़ में खोए हुए नहीं हो। परमेश्वर तुम्हारा नाम जानता है।

इस पर सोचो: क्या तुम ने कभी ऐसा महसूस किया कि परमेश्वर इतना व्यस्त है कि तुम्हें देख ही नहीं सकता? यशायाह 40:26 उस भावना में कैसे सहायता करता है?

यह करके देखो: आज रात बाहर जाकर तारों की ओर देखो (या रात के आकाश का कोई चित्र ढूँढ़ो)। याद रखो कि जिस परमेश्वर ने उनमें से हर एक का नाम रखा, वही तुम्हारा नाम भी जानता है।

हे परमेश्वर, तू कितना महान है! तू ने हर तारा बनाया और हर एक को नाम लेकर बुलाता है। धन्यवाद कि तू कभी इतना बड़ा या इतना व्यस्त नहीं कि मेरी परवाह न करे। जब मैं अपने आप को भुलाया हुआ महसूस करूँ, तब मुझे याद दिला कि तू मेरा नाम जानता है। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 4 — पवित्र, पवित्र, पवित्र

"जिस वर्ष राजा उज्जियाह मरा, मैं ने प्रभु को एक ऊँचे और उठे हुए सिंहासन पर विराजमान देखा; और उसके वस्त्र के घेर से मन्दिर भर गया। उसके ऊपर साराप खड़े थे, जिनमें से हर एक के छः-छः पंख थे: दो पंखों से वे अपने मुँह ढाँपे थे, दो से अपने पाँव ढाँपे थे, और दो से उड़ रहे थे। और वे एक दूसरे को पुकार-पुकारकर कह रहे थे: 'सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है; सारी पृथ्वी उसकी महिमा से भरपूर है।'"

— यशायाह 6:1–3 (BSB)

एक दिन यशायाह भविष्यद्वक्ता ने एक दर्शन देखा। उस ने परमेश्वर को एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान देखा, जो इतना महान था कि केवल उसके वस्त्र के घेर से ही पूरा मन्दिर भर गया। उसके चारों ओर **साराप** नामक अद्भुत स्वर्गदूत-समान प्राणी उड़ रहे थे। और वे एक दूसरे से पुकार-पुकारकर कह रहे थे, "पवित्र, पवित्र, पवित्र!"

इसे तीन बार क्यों कहना? इब्रानी भाषा में किसी शब्द को दोहराना उसे यथासंभव प्रबल बनाने का एक तरीका है। "पवित्र" एक बार कहने का अर्थ है *बहुत पवित्र*। उसे तीन बार कहने का अर्थ है *जितना पवित्र कभी हो सकता है उतना सबसे पवित्र*। बाइबल कभी नहीं कहती कि परमेश्वर "प्रेम, प्रेम, प्रेम" है या "बलवान, बलवान, बलवान" है। पर वह यह अवश्य कहती है कि वह "पवित्र, पवित्र, पवित्र" है।

तो **पवित्र** का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है *अलग किया हुआ*: और सब वस्तुओं से बिल्कुल भिन्न। परमेश्वर पूरी तरह शुद्ध है। उसमें रत्ती भर भी कुछ बुरा नहीं। तनिक भी नहीं। उस ने कभी झूठ नहीं कहा, कभी स्वार्थी नहीं रहा, कभी कोई भूल नहीं की। यहाँ तक कि साराप भी, जिन्होंने कभी पाप नहीं किया था, उसके सामने अपने मुँह ढाँप लेते थे।

जब यशायाह ने देखा कि परमेश्वर कितना पवित्र है, तब उसे अचानक अपने आप का भी साफ़ दिखाई देने लगा। वह पुकार उठा, "मुझ पर हाय!" वह जान गया कि वह परमेश्वर के

समान शुद्ध नहीं है। यह ऐसा है जैसे किसी उजियाले कमरे में जाकर अचानक अपने जूतों की सारी कीचड़ दिखाई देने लगे।

पर परमेश्वर ने यशायाह को वहीं नहीं छोड़ दिया। एक साराप एक जलता हुआ कोयला लेकर उसके पास उड़ आया और उसके होंठों को छूकर कहा कि उसका दोष दूर कर दिया गया है। परमेश्वर ने यशायाह को शुद्ध कर दिया।

यह उस बात की एक झलक है जो हम अगले सप्ताह सीखेंगे। परमेश्वर पवित्र है, और हम नहीं हैं। यह एक बड़ी समस्या है। पर परमेश्वर के पास हमें शुद्ध करने का एक उपाय है, और यही अब तक का सबसे अच्छा समाचार है।

अभी के लिये यह याद रखो: परमेश्वर हमारा कोई बड़ा, अधिक बलवान रूप भर नहीं है। वह पवित्र है। वह हमारी आराधना, हमारे आदर और हमारे पूरे मन के योग्य है।

इस पर सोचो: परमेश्वर को देखने पर यशायाह की पहली प्रतिक्रिया अपने ही पाप को देखना थी। तुम्हारे विचार में ऐसा क्यों हुआ?

यह करके देखो: अपनी कॉपी में "पवित्र" शब्द लिखो। उसके नीचे तीन बातें लिखो जो तुम ने आज इसके अर्थ के बारे में सीखीं।

हे पवित्र, पवित्र, पवित्र परमेश्वर, तू पूरी तरह भला और शुद्ध है। तेरे समान कोई नहीं। मुझे उन बार-बार के समयों के लिये खेद है जब मैं ने तुझे ऐसे समझा मानो तू छोटा हो। धन्यवाद कि तू लोगों को शुद्ध करता है, जैसे तू ने यशायाह के लिये किया। जिस आराधना के तू योग्य है, वैसे ही तेरी आराधना करने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 5 — परमेश्वर प्रेम है

"परमेश्वर का प्रेम हम में इस प्रकार प्रगट हुआ: परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा, ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। और प्रेम इसमें है: यह नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर यह कि उस ने हम से प्रेम किया और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित्त का बलिदान होने के लिये भेजा।"
— 1 यूहन्ना 4:9–10 (BSB)

प्रेम शब्द बहुत-सी चीज़ों के लिये इस्तेमाल होता है। "मुझे पिज़्ज़ा बहुत पसंद है।" "मुझे वह गीत बहुत पसंद है।" "मुझे अपना कुत्ता बहुत प्यारा है।" "मुझे गर्मियाँ बहुत भाती हैं।" कभी इसका अर्थ होता है *यह मुझे सचमुच अच्छा लगता है*। कभी इसका अर्थ होता है *इससे मुझे अच्छा महसूस होता है*।

पर उससे कुछ ही वचन पहले, 1 यूहन्ना 4:8 में, बाइबल एक अद्भुत बात कहती है: "परमेश्वर प्रेम है।" केवल यह नहीं कि परमेश्वर *प्रेम करता* है, पर यह कि परमेश्वर प्रेम *है*। प्रेम उसके पूरे स्वभाव का, आर-पार, एक भाग है। जो कुछ वह करता है, वह सब प्रेम से निकलता है।

तो हम कैसे जानें कि सच्चा प्रेम कैसा दिखता है? यूहन्ना हमें बताता है: **देखो कि परमेश्वर ने क्या किया।** "परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा, ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ।" परमेश्वर का प्रेम केवल कोई भला-सा अनुभव नहीं है। यह ऐसा प्रेम है जो *देता* है, और उस ने जो सबसे बहुमूल्य वस्तु थी, वही दे दी।

फिर यूहन्ना एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कहता है: "यह नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर यह कि उस ने हम से प्रेम किया।" किसी नवजात शिशु के बारे में सोचो। एक शिशु अपने माता-पिता के लिये कुछ नहीं कर सकती। वह न पका सकती है, न साफ़-सफ़ाई कर सकती है, न धन्यवाद कह सकती है, न "मैं तुम से प्रेम करती हूँ" तक कह सकती है। वह तो

बस रोती है और उसे नैपी की ज़रूरत होती है! फिर भी उसके माता-पिता उससे पूरी तरह प्रेम करते हैं। उनका प्रेम पहले आया।

परमेश्वर का प्रेम भी वैसा ही है, केवल कहीं बड़ा। उस ने यह प्रतीक्षा नहीं की कि हम पहले उससे प्रेम करें। उस ने यह प्रतीक्षा नहीं की कि हम काफ़ी अच्छे बन जाएँ। उस ने पहले हम से प्रेम किया, और उस ने यीशु को "हमारे पापों के प्रायश्चित्त का बलिदान" होने के लिये भेजा। इस बड़े वाक्यांश का अर्थ है कि यीशु ने हमारे पाप दूर करने और हमें परमेश्वर के पास लौटा लाने के लिये अपना प्राण दे दिया।

इसका अर्थ है कि तुम्हारे लिये परमेश्वर का प्रेम तुम्हारे अच्छे दिनों में बढ़ता और बुरे दिनों में घटता नहीं। यह तुम्हारे अंकों, तुम्हारे रूप-रंग या तुम्हारे कितने मित्र हैं, इस पर निर्भर नहीं करता। यह उस पर निर्भर करता है, और वह कभी नहीं बदलता।

जब तुम जानना चाहो कि परमेश्वर तुम से प्रेम करता है या नहीं, तब यह मत देखो कि आज तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है। क्रूस की ओर देखो।

इस पर सोचो: किसी से इसलिए प्रेम करना कि वह तुम्हारे लिये क्या करता है, और किसी से पहले ही, चाहे कुछ भी हो, प्रेम करना—इन दोनों में क्या अन्तर है?

यह करके देखो: आज किसी ऐसे को प्रेम दिखाओ जो बदले में तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। किसी छोटे बच्चे की सहायता करो, किसी अकेले बैठे व्यक्ति के पास बैठो, या बिना कहे कोई काम कर दो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तू प्रेम है। धन्यवाद कि तू ने मुझ से पहले प्रेम किया, इससे पहले कि मैं ने कभी तुझ से प्रेम किया। धन्यवाद कि तू ने मेरे लिये यीशु को भेजा। जिन दिनों मुझे तेरा प्रेम महसूस न हो, उन दिनों उस पर विश्वास करने में मेरी सहायता कर, और जैसे तू मुझ से प्रेम करता है वैसे ही औरों से प्रेम करने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 6 — वह परमेश्वर जो कभी नहीं बदलता

"हर एक अच्छा वरदान और हर एक सिद्ध दान ऊपर से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से उतरकर आता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन है और न ही घटने-बढ़ने की छाया।"

— याकूब 1:17 (BSB)

किसी धूप वाले दिन यह प्रयोग करके देखो। सुबह बाहर खड़े होकर अपनी परछाईं देखो। वह लम्बी और खिंची हुई होती है। दोपहर के समय फिर देखो। वह छोटी और ठिगनी होती है, ठीक तुम्हारे पैरों के नीचे। शाम को वह फिर से लम्बी होती है, पर दूसरी ओर को इशारा करती हुई। तुम्हारी परछाईं बदलती ही रहती है, क्योंकि सूरज आकाश में इधर से उधर सरकता रहता है।

याकूब परमेश्वर को "ज्योतियों का पिता" कहता है। वही है जिस ने सूरज, चाँद और तारों को बनाया। पर अपनी बनाई ज्योतियों के विपरीत, परमेश्वर में "न तो कोई परिवर्तन है और न ही घटने-बढ़ने की छाया।" वह इधर-उधर नहीं सरकता। उसका न कोई अच्छा मन-मिज़ाज होता है और न बुरा। वह कल, आज और सर्वदा बिल्कुल एक-सा है।

सोचो कि तुम्हारे जीवन में कितना कुछ बदलता है। तुम हर वर्ष और लम्बे होते जाते हो। तुम नई कक्षा में जाते हो। मित्र दूर चले जाते हैं। शायद तुम्हारा परिवार किसी नए घर या नए शहर में चला जाए। तुम्हारा प्रिय कार्यक्रम बन्द हो जाता है। यहाँ तक कि तुम्हारे सबसे अच्छे मित्र का भी कोई चिड़चिड़ा दिन हो सकता है।

पर परमेश्वर नहीं बदलता। जिस परमेश्वर ने मूसा के लिये लाल समुद्र को दो भाग किया, वही परमेश्वर आज तुम्हारे साथ है। जिस परमेश्वर ने कल तुम से प्रेम किया, वह कल भी तुम से प्रेम करेगा। बाइबल में उसकी प्रतिज्ञाएँ आज भी उतनी ही सच्ची हैं जितनी उस समय थीं जब वे लिखी गई थीं।

याकूब हमें परमेश्वर के स्वभाव के बारे में एक बात और बताता है: हर एक अच्छा और सिद्ध वरदान उसी की ओर से आता है। तुम्हारा परिवार, तुम्हारे मित्र, कोई धूप भरी दोपहर, कोई अच्छा भोजन, कोई हँसी-मज़ाक की बात, एक आरामदेह बिछौना: ये सब एक भले पिता की ओर से वरदान हैं। और क्योंकि वह कभी नहीं बदलता, इसलिए वह कभी भला होना नहीं छोड़ता।

जब तुम्हारे चारों ओर सब कुछ परछाईं के समान सरक रहा हो, तब तुम उस परमेश्वर को थामे रह सकते हो जो एक-सा बना रहता है।

इस पर सोचो: हाल ही में तुम्हारे जीवन में कोई ऐसी बात कौन-सी है जो बदल गई? यह जानना कि परमेश्वर कभी नहीं बदलता, कैसे सहायता करता है?

यह करके देखो: आज तुम जो भी अच्छा वरदान देखो, चाहे बड़ा या छोटा, उसकी एक सूची बनाते जाओ। सोने से पहले हर एक के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दो।

हे पिता, धन्यवाद कि तू कभी नहीं बदलता। जब मेरे चारों ओर की बातें अलग और नइ हों, तब मुझे याद दिला कि तू सदा एक-सा है। मुझे दिये हर अच्छे वरदान के लिये तेरा धन्यवाद। आज तेरी भलाई देखने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 7 — कुछ गड़बड़ हो गई

"क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, और उसके अनुग्रह से मसीह यीशु में हुए छुटकारे के द्वारा सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।"
— रोमियों 3:23–24 (BSB)

बिल्कुल आरम्भ में, परमेश्वर ने जो कुछ बनाया वह सब अच्छा था। उस ने पहले दो मनुष्यों, आदम और हव्वा को, एक सुन्दर बगीचे में रखा। वे परमेश्वर के साथ चल-फिर और बातें कर सकते थे। उनके पास हर वह वस्तु थी जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। परमेश्वर ने उन्हें केवल एक ही नियम दिया: एक विशेष पेड़ का फल मत खाना।

पर एक चालाक साँप आया और पूछने लगा, "क्या परमेश्वर ने सचमुच ऐसा कहा है?" उस ने हव्वा के मन में यह सन्देह डाल दिया कि क्या परमेश्वर सचमुच भला है, और क्या परमेश्वर उससे कुछ छिपा रहा है। हव्वा ने वह फल खा लिया और कुछ आदम को भी दे दिया, और उस ने भी खा लिया।

तुरन्त ही सब कुछ बदल गया। पहली बार उन्हें लज्जा महसूस हुई। जब उन्होंने परमेश्वर को बगीचे में चलते हुए सुना, तो वे छिप गए। मनुष्यों और परमेश्वर के बीच की मित्रता टूट गई।

बाइबल इसी को **पाप** कहती है: परमेश्वर के मार्ग के बदले अपना ही मार्ग चुनना। और उस दिन से हर व्यक्ति ऐसे मन के साथ जन्मा है जो अपना ही मार्ग चाहता है। "सब ने पाप किया है।" केवल बहुत बुरे लोगों ने नहीं। *सब ने।* इसमें वह सबसे भला व्यक्ति भी शामिल है जिसे तुम जानते हो, और इसमें मैं और तुम भी शामिल हैं।

"रहित होना" ऐसा है जैसे बास्केटबॉल फेंकना जो टोकरी तक पहुँचे ही नहीं। इससे फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम एक इंच से चूके या दस फुट से। चूक तो चूक है। परमेश्वर की महिमा उसकी सिद्ध भलाई है, और हम में से हर एक उससे चूक गया है। कुछ पाप बड़े लगते हैं, जैसे

चोरी करना। कुछ छोटे लगते हैं, जैसे जलन करना या पलटकर जवाब देना। पर वे सब परमेश्वर के सिद्ध स्तर को तोड़ते हैं।

यह बुरा समाचार लगता है, और है भी। पर पढ़ना बन्द मत करो! ठीक अगले शब्द देखो: "और उसके अनुग्रह से मसीह यीशु में हुए छुटकारे के द्वारा सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।"

धर्मी ठहराया जाना का अर्थ है परमेश्वर के साथ सही कर दिया जाना। *सेंतमेंत* का अर्थ है वरदान के रूप में। *अनुग्रह* का अर्थ है ऐसी कृपा जिसके हम योग्य नहीं। समस्या बड़ी है, पर परमेश्वर का उत्तर उससे भी बड़ा है। और उसके उत्तर का एक नाम है: यीशु।

इस सप्ताह हम देखेंगे कि जो गड़बड़ हुई, उसे परमेश्वर कैसे ठीक करता है।

इस पर सोचो: तुम्हारे विचार में आदम और हव्वा पाप करने के बाद परमेश्वर से क्यों छिप गए? क्या लोग आज भी परमेश्वर से छिपने की कोशिश करते हैं?

यह करके देखो: एक शान्त मिनट लो और परमेश्वर के सामने ईमानदार होकर बताओ कि इस सप्ताह तुम एक तरह से किस प्रकार अपने ही मार्ग पर चले। तुम्हें छिपने की ज़रूरत नहीं।

हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि मैं ने पाप किया है। मैं ने तेरे मार्ग के बदले अपना ही मार्ग चुना है, और मुझे इसका खेद है। धन्यवाद कि तू ने संसार को टूटा हुआ नहीं छोड़ दिया। धन्यवाद यीशु के लिये, जो बातों को सही करने आया। इस सप्ताह तेरे शुभ समाचार को समझने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 8 — अंधकार में एक प्रतिज्ञा

"क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया, और प्रभुता उसके कंधे पर होगी। और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।"
— यशायाह 9:6 (BSB)

क्या तुम ने कभी किसी ऐसी वस्तु की प्रतीक्षा की जिसकी तुम से प्रतिज्ञा की गई हो? कोई यात्रा, कोई जन्मदिन की दावत, या किसी प्रिय व्यक्ति का आना? प्रतीक्षा करना कठिन होता है। पर जब तुम जानते हो कि प्रतिज्ञा पूरी होने वाली है, तब वह तुम्हें थामे रहने के लिये कुछ दे देती है।

पाप ने संसार को तोड़ दिया, फिर भी परमेश्वर ने लोगों को आशा के बिना नहीं छोड़ा। उसी बगीचे में उस ने संकेत दिया कि किसी दिन एक बालक आएगा जो साँप का सिर कुचल देगा (तुम इसे उत्पत्ति 3:15 में पा सकते हो)। और सैकड़ों वर्षों तक परमेश्वर अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उस प्रतिज्ञा में और-और जोड़ता गया।

यशायाह ने आज का वचन यीशु के जन्म से लगभग 700 वर्ष पहले लिखा था। परमेश्वर के लोगों के लिये वह अंधकार का समय था। उनके शत्रु बलवान थे, और उनमें से बहुत से परमेश्वर से फिर गए थे। कुछ वचन पहले यशायाह उन्हें "अंधकार में चलनेवाले लोग" कहकर बताता है। पर परमेश्वर ने उन्हें एक ज्योति दी: एक प्रतिज्ञा कि एक बहुत ही विशेष बालक उत्पन्न होगा।

देखो इस बालक को किन नामों से पुकारा जाएगा:

- **अद्भुत युक्ति करनेवाला।** युक्ति करनेवाला सलाह देता है। यह बालक अब तक का सबसे बुद्धिमान मार्गदर्शक होगा, ऐसा जिस पर तुम सदा भरोसा कर सको।
- **पराक्रमी परमेश्वर।** यह कोई साधारण शिशु न होगा। यह स्वयं परमेश्वर होगा!

- **अनन्तकाल का पिता।** वह अपने लोगों की सदा देखभाल करेगा, किसी सिद्ध पिता के समान।
- **शान्ति का राजकुमार।** वह मनुष्यों और परमेश्वर के बीच शान्ति लाएगा, और किसी दिन पूरे संसार में शान्ति लाएगा।

भला यह कौन हो सकता है? सैकड़ों वर्षों तक लोग अचरज करते और प्रतीक्षा करते रहे। फिर एक रात बैतलहम में मरियम नाम की एक युवती के यहाँ एक शिशु उत्पन्न हुआ। उसका नाम यीशु था, और वही वह बालक था जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर आदि से करता आया था।

परमेश्वर सदा अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करता है। कभी-कभी हमें प्रतीक्षा करनी पड़ती है। पर उसकी एक भी प्रतिज्ञा कभी विफल नहीं हुई, और कभी न होगी।

इस पर सोचो: यशायाह 9:6 में यीशु के चार नामों में से कौन-सा नाम अभी तुम्हारे लिये सबसे अधिक अर्थ रखता है? क्यों?

यह करके देखो: इन चार नामों में से एक चुनो और आज अपनी प्रार्थना में उसका प्रयोग करो। उदाहरण के लिये: "यीशु, मेरे अद्भुत युक्ति करनेवाले, कृपया मुझे इसमें अगुवाई दे..."

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि जब संसार अंधकारमय था तब भी तू ने ज्योति की एक प्रतिज्ञा दी। धन्यवाद कि यीशु ही अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता और शान्ति का राजकुमार है। धन्यवाद कि तू सदा अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी करता है। जब मैं प्रतीक्षा करूँ तब तुझ पर भरोसा करने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 9 — परमेश्वर हमारे साथ

"वह एक पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वही अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार देगा। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो: 'देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे' (जिसका अर्थ है, 'परमेश्वर हमारे साथ')।"
— मत्ती 1:21–23 (BSB)

कल्पना करो कि तुम बीमार होकर बिछौने पर पड़े हो। एक मित्र तुम्हें सन्देश भेजता है: "जल्दी अच्छे हो जाओ!" यह भला है। पर दूसरा मित्र दरवाज़ा खटखटाता है, तुम्हारा मनपसन्द नाश्ता लेकर भीतर आता है और तुम्हारा साथ देने के लिये तुम्हारे बिछौने के सिरे पर बैठ जाता है। इनमें से कौन-सा अधिक प्रेम जैसा लगता है?

परमेश्वर दूर से कोई सन्देश भेज सकता था। और उस ने भविष्यद्वक्ताओं और पवित्रशास्त्र के द्वारा बहुत-से सन्देश भेजे *भी*। पर ठीक सही समय पर उस ने इससे कहीं बड़ा कुछ किया। **वह स्वयं आया।**

एक स्वर्गदूत यूसुफ नामक एक पुरुष को स्वप्न में दिखाई दिया। यूसुफ मरियम से मँगनी कर चुका था, और वह उलझन में और चिन्तित था, क्योंकि मरियम के यहाँ एक शिशु होने वाला था। स्वर्गदूत ने समझाया कि यह शिशु पवित्र आत्मा से आया है। फिर स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया कि उसका क्या नाम रखना: **यीशु**। इब्रानी में *यीशु* का अर्थ है "यहोवा उद्धार देता है।" यह नाम क्यों? "क्योंकि वही अपने लोगों को उनके पापों से उद्धार देगा।"

फिर मत्ती हमें बताता है कि इससे परमेश्वर की सैकड़ों वर्ष पहले की गई एक प्रतिज्ञा पूरी हुई: उस शिशु को **इम्मानुएल** पुकारा जाएगा, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ।"

सोचो यह कितना अद्भुत है। जिस परमेश्वर ने तारे बनाए, वह पवित्र परमेश्वर जिसकी साराप आराधना करते हैं, एक नन्हा शिशु बन गया। उस ने चलना सीखा। उसका एक

परिवार था। उसे भूख और थकान लगी। वह जानता था कि बालक होना कैसा होता है। वह दूर स्वर्ग में नहीं रह गया। वह पास आया, ठीक वहाँ तक नीचे जहाँ हम हैं।

और वह आज भी "परमेश्वर हमारे साथ" है। यीशु आज जीवित है, और वह प्रतिज्ञा करता है कि जो कोई उस पर भरोसा करता है, उसके साथ वह सदा रहेगा। बस में, रसोई की मेज़ पर, डॉक्टर के कमरे में, किसी दोस्त के घर रात बिताते समय: वहाँ भी यीशु ही इम्मानुएल है।

इस पर सोचो: तुम्हारे विचार में परमेश्वर ने केवल एक सन्देश भेजने के बदले स्वयं पृथ्वी पर आने को क्यों चुना?

यह करके देखो: आज, जब भी तुम किसी नई जगह में जाओ (कोई कक्षा, कोई दुकान, तुम्हारा कमरा), तब चुपचाप कहो, "यीशु, तू यहाँ मेरे साथ है।"

हे यीशु, मेरे लिये पृथ्वी पर आने के लिये तेरा धन्यवाद। धन्यवाद कि तू इम्मानुएल, परमेश्वर हमारे साथ, है। धन्यवाद कि तू लोगों को उनके पापों से उद्धार देने आया। मुझे याद दिला कि आज मैं जहाँ कहीं जाऊँ, तू मेरे साथ है। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 10 — क्रूस

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो पर अनन्त जीवन पाए।"
— यूहन्ना 3:16 (BSB)
"पर परमेश्वर हमारे प्रति अपना प्रेम इस रीति से प्रगट करता है: कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा।"
— रोमियों 5:8 (BSB)

कल्पना करो कि तुम आँगन में बेसबॉल खेल रहे हो। तुम ज़ोर से बल्ला घुमाते हो, *खटाक!*, और गेंद सीधे तुम्हारे पड़ोसी की बड़ी सामने वाली खिड़की के आर-पार निकल जाती है। काँच ही काँच बिखर जाता है। वह खिड़की इतने पैसों की है जितने तुम ने कभी देखे भी नहीं। कोई उपाय नहीं कि तुम कभी उसका दाम चुका सको।

तभी तुम्हारे पिता वहाँ आते हैं, पड़ोसी का दरवाज़ा खटखटाते हैं और कहते हैं, "मैं इसका दाम चुका दूँगा। पूरा का पूरा।" तुम ने यह कमाया नहीं। तुम इसके योग्य नहीं थे। उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे तुम से प्रेम करते हैं।

यह किसी कहीं बड़ी बात का एक छोटा-सा चित्र है।

दिन 7 में हम ने सीखा कि सब ने पाप किया है। हम सब ने ऐसी बातें कीं, कहीं और सोचीं जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं। और पाप किसी टूटी खिड़की के समान नहीं है। यह उससे कहीं अधिक गम्भीर है, क्योंकि यह परमेश्वर के साथ हमारी मित्रता तोड़ देता है। बाइबल कहती है कि पाप का परिणाम मृत्यु है: परमेश्वर से सदा के लिये अलग हो जाना। यूहन्ना 3:16 में "नाश होना" का यही अर्थ है। यह एक ऐसा कर्ज़ है जिसे हम में से कोई कभी चुका नहीं सकता।

पर देखो परमेश्वर ने क्या किया। उस ने "अपना एकलौता पुत्र दे दिया।" यीशु, जिस ने एक बार भी पाप नहीं किया, पृथ्वी पर आया और क्रूस पर मरा। जब वह मरा, तब उस ने

हमारे पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लिया, वह दण्ड जिसके योग्य हम थे। उस ने वह कर्ज़ चुकाया जो उस पर था ही नहीं, क्योंकि हम पर ऐसा कर्ज़ था जिसे हम चुका नहीं सकते थे।

अब रोमियों 5:8 फिर से पढ़ो: "जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा।" परमेश्वर ने यह प्रतीक्षा नहीं की कि हम पहले अपने आप को सुधार लें। उस ने यह नहीं कहा, "कुछ समय भले बने रहो और *तब* मैं तुम से प्रेम करूँगा।" उस ने हम से हमारी सबसे बुरी हालत में प्रेम किया। क्रूस इसका प्रमाण है।

और यूहन्ना 3:16 हमें बताता है कि नाश होने के बदले हमें क्या मिलता है: **अनन्त जीवन**। इसका अर्थ है अभी क्षमा, हर दिन परमेश्वर के साथ मित्रता, और उसके साथ एक सदा का घर। हम इसे कैसे पाते हैं? "जो कोई उस पर विश्वास करे।" यह कमाया नहीं जाता; इस पर भरोसा किया जाता है।

इसलिए अगली बार जब तुम किसी क्रूस को देखो, किसी कलीसिया पर, किसी हार में या किसी चित्र में, तब याद रखो: वह केवल कोई सजावट नहीं है। वह अब तक कहे गए सबसे बड़े "मैं तुम से प्रेम करता हूँ" है।

इस पर सोचो: रोमियों 5:8 कहता है कि यीशु हमारे लिये "जब हम पापी ही थे" तब मरा। तुम्हारे विचार में यह इतना अधिक क्यों मायने रखता है?

यह करके देखो: यूहन्ना 3:16 को स्मरण से कहने का प्रयास करो। फिर उसमें अपना ही नाम रखो: "क्योंकि परमेश्वर ने *[तुम्हारा नाम]* से इतना प्रेम किया..."

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तू ने मुझ से इतना प्रेम किया कि तू ने यीशु को दे दिया। धन्यवाद कि उस ने मेरे पाप का दण्ड क्रूस पर अपने ऊपर ले लिया, यद्यपि उस ने कभी कुछ ग़लत नहीं किया। मैं अपने पाप का दाम कभी नहीं चुका सकता था, पर यीशु ने वह सब चुका दिया। मुझे उस पर विश्वास करने में और उस ने जो किया उसके लिये हर दिन धन्यवादी होकर जीने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 11 — खाली कब्र

"जब स्त्रियाँ भय के मारे अपने मुँह भूमि की ओर झुकाए हुए थीं, तब उन दो पुरुषों ने उनसे पूछा, 'तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो? वह यहाँ नहीं, वह जी उठा है!'"

— लूका 24:5-6 (BSB)

रविवार की सुबह बहुत तड़के का समय था, अभी लगभग अँधेरा ही था। स्त्रियों का एक छोटा समूह उदास मन से यरूशलेम के बाहर एक कब्र की ओर चला जा रहा था। वे सुगन्धित मसाले लिये हुए थीं, वही जिनसे लोग किसी मरे हुए व्यक्ति के शव की देखभाल किया करते थे। तीन दिन पहले उन्होंने यीशु को क्रूस पर मरते हुए देखा था। उन्होंने देखा था कि उसका शरीर चट्टान में खोदी गई एक कब्र में रखा गया, और द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया गया था। अब वे बस इतना चाहती थीं कि अन्तिम बार उसके शरीर की देखभाल कर सकें।

परन्तु जब वे पहुँचीं, तो पत्थर लुढ़का हुआ हट चुका था। वे भीतर गईं, और यीशु का शरीर वहाँ नहीं था!

जब वे वहाँ घबराई हुई खड़ी थीं, तभी चमकीले वस्त्र पहने हुए दो पुरुष अचानक उनके पास आ खड़े हुए। स्त्रियाँ भय से भर गईं और भूमि की ओर झुक गईं। तब उन पुरुषों ने अब तक का सबसे अद्भुत प्रश्न पूछा: "तुम जीवित को मरे हुओं में क्यों ढूँढ़ती हो? वह यहाँ नहीं, वह जी उठा है!"

यीशु **जीवित** था!

यह इतनी बड़ी बात क्यों है? इसके तीन कारण हैं।

पहला, यह प्रमाणित करता है कि यीशु वही है जो उसने अपने विषय में कहा था। यीशु ने अपने मित्रों से कई बार कहा था कि वह मरेगा और तीसरे दिन फिर जी उठेगा। कोई भी यह *कह* सकता है कि वह परमेश्वर है। परन्तु जो यीशु ने किया, वह केवल परमेश्वर ही कर सकता था।

दूसरा, इसका अर्थ है कि मृत्यु हार गई है। मृत्यु मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। आज तक जितने लोग जीवित रहे, वे सब मरे हैं, परन्तु यीशु सीधा कब्र में से निकल आया। और वह प्रतिज्ञा करता है कि जो कोई उस पर भरोसा रखता है, वह भी उसके साथ सदा जीवित रहेगा।

तीसरा, इसका अर्थ है कि यीशु अभी इसी समय जीवित है। हम किसी इतिहास की पुस्तक के मरे हुए नायक के पीछे नहीं चलते। हम एक जीवित उद्धारकर्ता के पीछे चलते हैं। तुम आज उससे बात कर सकते हो। वह तुम्हारी सुनता है। वह तुम्हें जानता है। वह तुम्हारे साथ है।

क्रूस दिखाता है कि परमेश्वर हमसे कितना प्रेम करता है। खाली कब्र दिखाती है कि उसका प्रेम जय पाता है।

इस पर सोचो: तुम्हारे विचार में कब्र की ओर जाते समय उन स्त्रियों को कैसा लगा होगा? और वहाँ से लौटते समय उन्हें कैसा लगा होगा?

यह करके देखो: आज किसी को बताओ, "यीशु जीवित है!" और देखो कि क्या तुम समझा सकते हो कि यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

हे यीशु, तू जीवित है! धन्यवाद कि तू ठीक वैसे ही मरे हुओं में से जी उठा जैसा तूने कहा था। धन्यवाद कि मृत्यु हार गई है और तू अभी इसी समय मेरे साथ है। सहायता कर कि मैं हर दिन यह जानते हुए जीऊँ कि मेरा उद्धारकर्ता जीवित है। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 12 — उपहार को ग्रहण करना

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है; और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।"

— इफिसियों 2:8–9 (BSB)

कल्पना करो कि आज तुम्हारा जन्मदिन है। तुम्हारी दादी तुम्हें सुन्दर ढंग से सजाया हुआ एक उपहार देती हैं। तुम मुस्कराते हो, अपनी जेब में हाथ डालते हो और कहते हो, "धन्यवाद! मुझे आपको कितने पैसे देने हैं?"

यह तो अजीब बात होगी, है न? सम्भवतः तुम उनका मन दुखा दोगे। उपहार वह वस्तु नहीं जिसके लिये तुम पैसे चुकाते या मेहनत करते हो। उपहार तो वह है जिसे तुम केवल **ग्रहण** करते हो।

इस सप्ताह हमने अब तक का सबसे अच्छा समाचार सीखा है। हम सब ने पाप किया है, और पाप हमें पवित्र परमेश्वर से अलग कर देता है। परन्तु परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि उसने यीशु को भेज दिया। यीशु ने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर लेने के लिये क्रूस पर प्राण दिए, और वह फिर जी उठा। अब वह हमें क्षमा और अनन्त जीवन देना चाहता है।

परन्तु हम इसे पाते कैसे हैं? बहुत से लोग सोचते हैं, *मुझे इतना अच्छा बनना होगा कि परमेश्वर मुझे स्वीकार करे। यदि मैं कलीसिया जाऊँ, माता-पिता की आज्ञा मानूँ, बाइबल पढ़ूं और बुरे कामों से अधिक भले काम करूँ, तब परमेश्वर मुझे ग्रहण करेगा।* परन्तु देखो, इफिसियों में क्या लिखा है: यह "कर्मों के कारण नहीं" है। तुम इसे कमा नहीं सकते। कोई भी कभी इतना अच्छा नहीं बन सकता।

इसके बदले, हमारा उद्धार "अनुग्रह से...विश्वास के द्वारा" होता है।

अनुग्रह का अर्थ है परमेश्वर की वह कृपा जिसके हम योग्य नहीं। यह परमेश्वर का हमें उपहार देना है।

विश्वास का अर्थ है भरोसा करना। यह ऐसा है मानो तुम उपहार लेने के लिये अपने हाथ बढ़ाते हो। तुम विश्वास करते हो कि यीशु ने *तुम्हारे* पापों के लिये प्राण दिए और फिर जी उठा, और तुम उसी पर (अपने आप पर नहीं) भरोसा रखते हो कि वह तुम्हें परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए।

और क्योंकि यह एक उपहार है, इसलिये "कोई घमण्ड नहीं कर सकता।" स्वर्ग में कोई यह नहीं कहेगा, "मैं यहाँ इसलिये पहुँचा क्योंकि मैं बहुत अच्छा था!" वहाँ हर कोई कहेगा, "मैं यहाँ यीशु के कारण हूँ।"

क्या तुमने यह उपहार ग्रहण किया है? हो सकता है तुमने जीवन भर यीशु के विषय में सुना हो, परन्तु स्वयं कभी उस पर भरोसा न रखा हो। तुम आज ही ऐसा कर सकते हो। इसके लिये कोई जादुई शब्द नहीं हैं। परमेश्वर तुम्हारे मन को देखता है। तुम नीचे दी गई प्रार्थना जैसी कोई प्रार्थना कर सकते हो। यदि तुम ऐसा करो, तो कृपया किसी माता या पिता को, किसी पासबान को, या किसी और मसीही को जिस पर तुम भरोसा करते हो, अवश्य बताना। वे तुम्हारे साथ आनन्द मनाना चाहेंगे!

इस पर सोचो: तुम्हारे विचार में इतने सारे लोग परमेश्वर के प्रेम को उपहार के रूप में ग्रहण करने के बदले उसे कमाने का प्रयास क्यों करते हैं?

यह करके देखो: यदि तुमने यीशु पर भरोसा रखा है, तो वह दिन लिख लो जब तुम्हें याद है कि तुमने ऐसा किया, या यदि वह दिन आज ही है तो आज की तारीख लिख लो। यदि तुम अभी निश्चित नहीं हो, तो इस सप्ताह किसी बड़े व्यक्ति से जिस पर तुम भरोसा करते हो, इस विषय में बात करो।

हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किया है और मैं स्वयं को तेरे योग्य इतना अच्छा नहीं बना सकता। धन्यवाद कि फिर भी तू मुझसे प्रेम करता है। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु ने मेरे पापों के लिये क्रूस पर प्राण दिए और फिर जी उठा। अभी इसी समय, मैं तेरा उपहार ग्रहण करता हूँ। मैं भरोसा रखता हूँ कि यीशु मेरा उद्धारकर्ता है, और मैं चाहता हूँ कि उसी को अपना प्रभु मानकर उसके पीछे चलूँ। धन्यवाद कि तूने मुझे क्षमा किया और अपनी सन्तान बनाया। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 13 — उद्देश्य से रचा गया

"क्योंकि मेरे अंत:करण को तूने ही रचा; तूने मुझे माता के गर्भ में बुन दिया। मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, क्योंकि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ। तेरे काम अद्भुत हैं, और मेरा मन यह भली-भाँति जानता है।"
— भजन संहिता 139:13–14 (BSB)

जेडा अपनी कक्षा के बच्चों की तस्वीरें स्क्रॉल कर रही थी। किसी के बाल एकदम सुन्दर थे। किसी के डांस वीडियो पर सौ लाइक थे। शहर के दूसरे कोने में, मार्कस बेंच पर बैठा अपनी टीम को खेलते हुए देख रहा था। बाकी लड़के हर काम में उससे अधिक तेज़, अधिक लम्बे और बेहतर लग रहे थे। दोनों के मन में एक ही बात चल रही थी: *मैं उनके जैसा क्यों नहीं हो सकता?*

क्या तुम्हें कभी ऐसा लगा है? दूसरे बच्चों से अपनी तुलना करना आसान है: अपनी सूरत, अपने कपड़े, अपने नम्बर, अपने गुण, और कितने दोस्त हैं। परन्तु तुलना करना एक ऐसा खेल है जिसे कोई कभी नहीं जीतता। किसी न किसी काम में हमेशा कोई ऐसा होगा जो तुमसे बेहतर लगेगा।

राजा दाऊद ने, जिसने भजन संहिता 139 लिखा, स्वयं को एक अलग ढंग से देखा। उसने कहा कि परमेश्वर ने "मुझे बुन दिया।" किसी को स्वेटर बुनते हुए सोचो। वे इसे संयोग से नहीं करते! वे हर रंग को चुनते हैं और हर फंदा जान-बूझकर बनाते हैं। परमेश्वर ने भी तुम्हें इसी प्रकार बनाया। तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी हँसी, तुम्हारा स्वभाव, तुम्हारे मन के काम करने का ढंग, यहाँ तक कि वे बातें भी जिन्हें तुम बदला हुआ देखना चाहते हो: परमेश्वर तुम्हारे जन्म से पहले ही यह सब जानता था।

भयानक शब्द पर ध्यान दो। इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हें बनाते समय परमेश्वर डरा हुआ था! इसका अर्थ है *बड़े आदर और अत्यन्त सावधानी के साथ*। जब परमेश्वर ने तुम्हें बनाया, तो उसने कुछ अद्भुत बनाया।

एक और बात पर ध्यान दो: दाऊद ने यह नहीं कहा, "मैं अद्भुत रीति से रचा गया हूँ...जब मैं उस दूसरे बच्चे जितना अच्छा बन जाऊँगा।" उसने कहा, "मेरा मन यह भली-भाँति जानता है।" उसने इसे अपने मन की गहराई से माना।

इसका अर्थ यह नहीं कि तुम सिद्ध हो या कभी गलती नहीं करोगे। इसका अर्थ है कि तुम्हारा मोल किसी दर्पण, किसी स्कोरबोर्ड या किसी स्क्रीन से नहीं आता। यह उसी से आता है जिसने तुम्हें बनाया और तुमसे प्रेम करता है। सारे संसार में कोई और तुम बनने के लिये नहीं रचा गया।

और याद रखो: जिन बच्चों से तुम अपनी तुलना करते हो, उन्हें भी परमेश्वर ने ही बुना है। इसलिये उनसे होड़ करने के बदले, तुम उनके लिये आनन्द मना सकते हो।

इस पर सोचो: तुम्हें दूसरों से अपनी तुलना करने की सबसे अधिक इच्छा कब होती है? यदि तुम सचमुच भजन संहिता 139:14 पर विश्वास करो, तो क्या बदल जाएगा?

यह करके देखो: एक चिपकने वाली पर्ची पर लिखो, "मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ," और उसे अपने दर्पण पर लगा दो। इस सप्ताह हर सुबह इसे ऊँची आवाज़ में पढ़ो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तूने मुझे जान-बूझकर बनाया। जब मैं दूसरों से अपनी तुलना करने लगूँ, तो मुझे याद दिला कि तूने मुझे बुना है और तेरे काम अद्भुत हैं। सहायता कर कि मैं स्वयं को वैसे ही देखूँ जैसे तू मुझे देखता है। और यह भी सहायता कर कि मैं दूसरे लोगों को भी वैसे ही देखूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 14 — परमेश्वर की सन्तान

"देखो, पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ। और हम यही हैं! संसार हमें इस कारण नहीं जानता, क्योंकि उसने उसको भी नहीं जाना।"

— 1 यूहन्ना 3:1 (BSB)

कुछ परिवार गोद लेने से बढ़ते हैं। एक माता और पिता किसी ऐसे बच्चे को चुनते हैं जिसे परिवार की आवश्यकता होती है, और उस बच्चे को सदा के लिये अपना बनाने के लिये वे एक लम्बी प्रक्रिया से गुज़रते हैं। गोद लेने के दिन, एक न्यायी इसे आधिकारिक बना देता है। उस दिन से, उस बच्चे को परिवार का कुलनाम मिल जाता है। उसे घर में एक कमरा, भोजन की मेज़ पर एक स्थान, और हर पारिवारिक तस्वीर में एक जगह मिलती है। वह कोई अतिथि या मेहमान नहीं होता। वह परिवार का ही होता है।

बाइबल कहती है कि जब तुम यीशु पर भरोसा रखते हो, तो तुम्हारे साथ कुछ ऐसा ही होता है। परमेश्वर तुम्हें अपने परिवार में गोद ले लेता है। तुम **परमेश्वर की सन्तान** बन जाते हो।

यूहन्ना इस बात से इतना चकित हुआ कि उसने "देखो!" कहकर आरम्भ किया। यह कहने का एक पुराना ढंग है, *इस पर ध्यान दो! इसे मत चूको!* "देखो, पिता ने हमें कैसा प्रेम दिया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ।"

फिर वह कुछ छोटे शब्द जोड़ता है जिन्हें पढ़ते समय आसानी से छोड़ दिया जा सकता है: "और हम यही हैं!" यह हमें बुलाने का केवल कोई प्यारा नाम नहीं है। यह सच है। यदि तुम यीशु के हो, तो परमेश्वर सचमुच तुम्हारा पिता है, और तुम सचमुच उसकी सन्तान हो।

इसका तुम्हारे लिये क्या अर्थ है?

- **तुम किसी के हो।** चाहे स्कूल में तुम्हें अलग-थलग महसूस हो, फिर भी परमेश्वर के परिवार में तुम्हारा एक ऐसा स्थान है जिसे कोई तुमसे छीन नहीं सकता।
- **तुमसे प्रेम किया जाता है।** परमेश्वर अपनी सन्तान को केवल सहन नहीं करता। वह उनसे प्रसन्न होता है।
- **तुम किसी भी समय उसके पास आ सकते हो।** बच्चों को अपने पिता से बात करने के लिये कोई समय तय नहीं करवाना पड़ता। तुम्हें भी नहीं।
- **तुम्हारा एक बहुत बड़ा परिवार है।** संसार भर में हर मसीही तुम्हारा भाई या बहन है।

यूहन्ना यह भी कहता है कि संसार "हमें नहीं जानता।" कुछ लोग यह नहीं समझ पाएँगे कि तुम यीशु के पीछे क्यों चलते हो। कोई बात नहीं। उन्होंने यीशु को भी नहीं समझा था। सबसे बड़ी बात यह है कि तुम्हारा पिता तुम्हें जानता है।

इस पर सोचो: यदि तुम सचमुच विश्वास करो कि तुम परमेश्वर की सन्तान हो, तो तुम्हारा दिन कैसे अलग होगा?

यह करके देखो: अपनी कॉपी में बड़े अक्षरों में लिखो, "मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ।" उसके नीचे तीन ऐसी बातें लिखो जो इसके कारण तुम्हारे विषय में सच हैं।

हे पिता, धन्यवाद कि तूने मुझसे इतना प्रेम किया कि मुझे अपनी सन्तान बना लिया। धन्यवाद कि मैं तेरे परिवार का हूँ। जब मुझे अलग-थलग या अकेला महसूस हो, तो मुझे याद दिला कि मैं किसका हूँ। धन्यवाद कि मैं किसी भी समय तेरे पास आ सकता हूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 15 — क्षमा किया गया

"उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमें बदला दिया। क्योंकि जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊँचा है, वैसे ही उसका करुणामय प्रेम उन पर प्रबल है जो उसका भय मानते हैं। जैसे पूरब पश्चिम से दूर है, वैसे ही उसने हमारे अपराधों को हम से दूर कर दिया है।"
— भजन संहिता 103:10–12 (BSB)

यहाँ एक पहेली है। यदि तुम उत्तर की ओर चलना शुरू करो और चलते रहो, तो अन्त में तुम उत्तरी ध्रुव पर पहुँच जाओगे। फिर, यदि तुम सीधे चलते रहो, तो अचानक तुम *दक्षिण* की ओर बढ़ने लगोगे। उत्तर और दक्षिण ध्रुवों पर आपस में मिल जाते हैं।

परन्तु पूरब और पश्चिम का क्या? यदि तुम पूरब की ओर चलना शुरू करो, तो तुम सारी पृथ्वी का चक्कर लगा सकते हो और एक बार भी पश्चिम की ओर नहीं चलोगे। पूरब और पश्चिम कभी नहीं मिलते। वे सदा आगे ही बढ़ते जाते हैं।

दाऊद ने ठीक यही चित्र प्रयोग किया। जब परमेश्वर तुम्हें क्षमा करता है, तो वह तुम्हारे पापों को "जैसे पूरब पश्चिम से दूर है" वैसे ही दूर कर देता है। दूसरे शब्दों में, वह उन्हें इतनी दूर ले जाता है कि वे कभी लौटकर तुमसे मिल नहीं सकते।

हो सकता है तुमने कुछ ऐसा किया हो जिससे आज भी तुम्हें लज्जा महसूस होती है। हो सकता है तुमने झूठ बोला हो, या कोई कठोर बात कही हो, या कुछ ऐसा किया हो जिसके बारे में कोई नहीं जानता। यदि तुमने इसके विषय में परमेश्वर को बता दिया है और यीशु पर भरोसा रखा है, तो वह **मिट गया** है। यीशु ने उसका दाम क्रूस पर चुका दिया। परमेश्वर कोई सूची नहीं रख रहा। वह इसे बाद में फिर उठाने की प्रतीक्षा में नहीं है।

दाऊद यह भी कहता है कि परमेश्वर ने "हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया।" इसका अर्थ है कि परमेश्वर हमें वह नहीं देता जिसके हम योग्य हैं। इसके बदले, वह

हमें "करुणामय प्रेम" देता है: एक ऐसा प्रेम जो इतना बड़ा है कि पृथ्वी के ऊपर आकाश जितना ऊँचा है।

कभी-कभी सबसे कठिन होता है स्वयं को क्षमा करना। हो सकता है परमेश्वर के क्षमा कर देने के बाद भी तुम अपने किए हुए के बारे में सोचते रहो। परन्तु यदि परमेश्वर ने तुम्हारा पाप दूर फेंक दिया है, तो तुम्हें उसे बार-बार खोदकर वापस निकालने की आवश्यकता नहीं। जब तुम किसी ऐसी बात के लिये दोषी महसूस करो जिसे तुम पहले ही मान चुके हो, तो स्वयं को याद दिलाओ: *परमेश्वर ने उसे जैसे पूरब पश्चिम से दूर है वैसे ही दूर कर दिया है।*

क्षमा पाने का अर्थ यह नहीं कि पाप का कोई महत्व नहीं। इसका अर्थ है कि यीशु ने उसे इतना गम्भीरता से लिया कि उसके लिये प्राण दे दिए। और अब तुम स्वतन्त्र हो।

इस पर सोचो: क्या कुछ ऐसा है जिसे क्षमा करने के लिये तुमने परमेश्वर से माँगा, फिर भी तुम उसके लिये दोषी महसूस करते हो? भजन संहिता 103:12 इसके विषय में क्या कहता है?

यह करके देखो: कागज़ के एक टुकड़े पर कोई ऐसा पाप लिखो जिसे तुमने परमेश्वर के सामने मान लिया है। फिर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर फेंक दो, इस बात की याद के रूप में कि परमेश्वर ने उसे दूर कर दिया है।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तूने मेरे साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जैसा मेरे पाप योग्य थे। धन्यवाद कि तूने मुझे क्षमा किया और मेरे पाप को वैसे ही दूर किया जैसे पूरब पश्चिम से दूर है। जब मैं उन बातों के लिये दोषी महसूस करूँ जिन्हें तू पहले ही क्षमा कर चुका है, तो सहायता कर कि मैं तेरे वचन पर भरोसा रखूँ। हे यीशु, धन्यवाद कि तूने इन सब का दाम चुका दिया। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 16 — बिल्कुल नया

"इसलिये यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है। पुरानी बातें बीत गईं। देखो, सब कुछ नया हो गया है!"
— 2 कुरिन्थियों 5:17 (BSB)

एक इल्ली अपने दिन रेंगते हुए और पत्ते कुतरते हुए बिताती है। वह धीमी और रोएँदार होती है, और अधिक दूर नहीं जा सकती। फिर एक दिन वह स्वयं को एक कोश में लपेट लेती है। भीतर, कुछ अद्भुत घटित होता है। जब वह अन्त में बाहर निकलती है, तो वह अब इल्ली नहीं रहती। उसके पंख होते हैं! वह उड़ सकती है! वह पूरी तरह बदलकर कुछ नया बन गई है।

बाइबल कहती है कि हर उस व्यक्ति के साथ कुछ ऐसा ही होता है जो यीशु पर भरोसा रखता है। "यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है।" पुराने तुम का केवल थोड़ा सुधरा हुआ रूप नहीं। **नया।**

क्या बदलता है? जब तुम यीशु पर भरोसा रखते हो, तो परमेश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा करता है और अपने पवित्र आत्मा को तुम्हारे भीतर रख देता है (इसके बारे में हम दिन 18 को और सीखेंगे)। वह तुम्हें एक नया मन देता है जो उससे प्रेम करना और उसे प्रसन्न करना चाहता है। जिन बातों की तुम्हें पहले परवाह नहीं थी, जैसे प्रार्थना करना या बाइबल पढ़ना, वे तुम्हारे लिये महत्वपूर्ण होने लगती हैं। जो बातें पहले मज़ेदार लगती थीं, जैसे किसी के साथ बुरा व्यवहार करना या झूठ बोलना, वे अब गलत लगने लगती हैं।

परन्तु ठहरो। यदि तुम बिल्कुल नए हो, तो फिर तुम कभी-कभी अपना आपा क्यों खो देते हो, या जलन क्यों करते हो, या ऐसी बातें क्यों कह देते हो जो नहीं कहनी चाहिए? यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है। नई सृष्टि होने का अर्थ यह नहीं कि तुम अभी सिद्ध हो चुके हो। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने तुम्हारे भीतर कुछ नया आरम्भ किया है, और वह उस पर काम करता रहेगा। एक तितली को अब भी उड़ना सीखना पड़ता है। एक बीज को अब भी बढ़कर पेड़ बनना पड़ता है।

इसे इस प्रकार समझो: पहले तुम कोई ऐसे व्यक्ति थे जो पाप के *थे*। अब तुम यीशु के हो। पाप अब तुम्हारा मालिक नहीं। जब तुम कोई गलती करते हो, तो तुम्हें फँसे नहीं रहना है। तुम क्षमा माँग सकते हो, फिर से उठ सकते हो और बढ़ते रह सकते हो, क्योंकि अब सचमुच तुम यही हो।

"पुरानी बातें बीत गईं। देखो, सब कुछ नया हो गया है!"

इस पर सोचो: यीशु के पीछे चलना शुरू करने के बाद से परमेश्वर तुम्हें, या तुम्हारे किसी जानने वाले को, किस एक तरीके से बदलता हुआ तुमने देखा है?

यह करके देखो: किसी माता या पिता से, या किसी बड़े मसीही से पूछो कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे बदला है। उनकी कहानी ध्यान से सुनो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि जब मैं यीशु पर भरोसा रखता हूँ, तो तू मुझे नया बना देता है। धन्यवाद कि पाप अब मेरा मालिक नहीं। जब मैं कोई गलती करूँ, तो मुझे याद दिला कि मसीह में सचमुच मैं कौन हूँ। मुझे हर दिन बदलता रह, कि मैं और अधिक यीशु के समान बनूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 17 — कभी अकेले नहीं

"तुम्हारा स्वभाव धन के लोभ से रहित हो, और जो तुम्हारे पास है उसी में सन्तोष रखो; क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, 'मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।' इसलिये हम साहस के साथ कहते हैं, 'प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?'"
— इब्रानियों 13:5–6 (BSB)

किसी ऐसे समय के बारे में सोचो जब तुम्हें सचमुच अकेलापन महसूस हुआ। हो सकता है वह किसी नए स्कूल में तुम्हारा पहला दिन रहा हो, जब तुम्हें पता ही नहीं था कि दोपहर के भोजन के समय कहाँ बैठें। हो सकता है वह किसी बुरे सपने के बाद अँधेरे में जागते हुए पड़े रहना रहा हो। हो सकता है वह वह समय रहा हो जब किसी मित्र ने तुमसे बात करना बंद कर दिया, या जब तुम्हारे परिवार में कोई बीमार था और कोई तुम्हें बताता ही नहीं था कि क्या हो रहा है।

अकेलापन महसूस करना सबसे कठिन भावनाओं में से एक है। परन्तु आज का वचन सारी बाइबल की सबसे अच्छी प्रतिज्ञाओं में से एक है। परमेश्वर कहता है, "मैं तुझे **कभी** न छोड़ूँगा, और **न कभी** तुझे त्यागूँगा।"

त्यागना का अर्थ है किसी को छोड़कर चले जाना और उसे अकेला छोड़ देना। परमेश्वर कहता है कि वह कभी, कभी भी ऐसा नहीं करेगा। तब भी नहीं जब तुम डरे हुए हो। तब भी नहीं जब तुम उदास हो। तब भी नहीं जब तुमने कोई गलती की हो। तब भी नहीं जब ऐसा लगे कि और कोई नहीं समझता।

ध्यान दो कि यह प्रतिज्ञा कहाँ आती है। लेखक इस बात की चर्चा कर रहा है कि जो तुम्हारे पास है उसी में सन्तोष रखो। क्यों? क्योंकि जब तुम्हारे पास परमेश्वर है, तो तुम्हारे पास वह है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। धन, वस्तुएँ और लोकप्रियता, ये सब मिट सकते हैं। परन्तु परमेश्वर बना रहता है।

फिर देखो कि लेखक कैसे उत्तर देता है: "इसलिये हम साहस के साथ कहते हैं, 'प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा।'" क्योंकि परमेश्वर सदा हमारे साथ रहता है, इसलिये हमें डर के वश में नहीं रहना है। डरावनी बातें फिर भी हो सकती हैं। लोग फिर भी निर्दयी हो सकते हैं। परन्तु तुम्हें इनमें से किसी का भी सामना कभी अकेले नहीं करना पड़ता।

लोग तुम्हें निराश कर सकते हैं, वे लोग भी जो तुमसे प्रेम करते हैं। मित्र दूर चले जाते हैं। बड़े लोग गलतियाँ करते हैं। परन्तु परमेश्वर हर बार अपना वचन निभाता है।

इसलिये अगली बार जब तुम्हें अकेलापन महसूस हो, तो इसे ऊँची आवाज़ में कहो: "प्रभु मेरा सहायक है।" यह खेल के मैदान में सच है, अस्पताल में सच है, किसी नए स्कूल में सच है, और आधी रात के समय भी सच है।

इस पर सोचो: तुम्हें सबसे अधिक अकेलापन कब महसूस होता है? उस समय इस प्रतिज्ञा को याद रखना तुम्हारी कैसे सहायता कर सकता है?

यह करके देखो: परमेश्वर की प्रतिज्ञा को याद कर लो: "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।" आज रात सोते समय इसे अपने आप से कहो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तूने प्रतिज्ञा की है कि तू मुझे कभी न छोड़ेगा और न त्यागेगा। जब मुझे अकेलापन महसूस हो, तो मुझे याद दिला कि तू यहीं मेरे पास है। तू मेरा सहायक है, इसलिये मुझे डरने की आवश्यकता नहीं। धन्यवाद कि तू सदा अपनी प्रतिज्ञाएँ निभाता है। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 18 — भीतर रहनेवाला सहायक

"और मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सदा तुम्हारे साथ रहे—अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न तो उसे देखता और न उसे जानता है। परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में होगा।"
— यूहन्ना 14:16-17 (IRV)

यह वह रात थी जब यीशु क्रूस पर मरनेवाले थे। वे अपने चेलों के साथ भोजन कर रहे थे, और उन्होंने उनसे एक ऐसी बात कही जिससे वे बहुत उदास हो गए: वे जाने वाले थे। चेले तीन साल से उनके पीछे चलते आए थे। वे उनके बिना कैसे आगे बढ़ पाते?

परन्तु यीशु ने उनसे एक अद्भुत प्रतिज्ञा की। वे पिता से विनती करेंगे कि वह "एक और सहायक" भेजे। **सहायक** वह होता है जो तुम्हारी मदद करने के लिए तुम्हारे साथ खड़ा रहता है—जैसे कोई प्रशिक्षक, कोई मार्गदर्शक, या कोई जो तुम्हारे लिए बोलता है। यीशु **पवित्र आत्मा** के बारे में बात कर रहे थे।

पवित्र आत्मा के बारे में कुछ ज़रूरी बातें जान लेना अच्छा है:

वह एक व्यक्ति है, कोई शक्ति नहीं। पवित्र आत्मा कोई भावना या कोई रहस्यमयी शक्ति नहीं है। वह परमेश्वर है, ठीक वैसे ही जैसे पिता और पुत्र हैं। यीशु उसके लिए "वह" शब्द कहते हैं, "यह" नहीं।

वह हर उस व्यक्ति के भीतर रहता है जो यीशु पर भरोसा करता है। उन अंतिम शब्दों पर ध्यान दो: "वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में होगा।" जब चेलों के पास यीशु थे, तब वे उनके *साथ* थे। परन्तु आत्मा उनके *भीतर* होगा। यह तो और भी नज़दीक है!

वह तुम्हें बाइबल समझने में मदद करता है। कुछ ही आयतों के बाद यीशु ने कहा कि आत्मा "तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण

कराएगा" (यूहन्ना 14:26)। जब कोई आयत अचानक समझ में आ जाए, या ठीक उसी समय याद आ जाए जब तुम्हें उसकी ज़रूरत हो, तो यह आत्मा का काम है।

वह तुम्हें आज्ञा मानने की सामर्थ्य देता है। याद है वह फल जिसके बारे में हम पुस्तक 3 में बात करेंगे—जैसे प्रेम, आनन्द, शान्ति और संयम? आत्मा इन्हें तुम्हारे भीतर बढ़ाता है। तुम्हें अपने ही बल से अच्छा बनने की ज़रूरत नहीं।

वह तुम्हें सांत्वना देता है। जब तुम उदास या डरे हुए हो, तब आत्मा ठीक तुम्हारे साथ होता है।

तुम पवित्र आत्मा को देख नहीं सकते, ठीक वैसे ही जैसे तुम हवा को नहीं देख सकते। परन्तु तुम यह देख सकते हो कि वह क्या करता है। और यदि तुम यीशु के हो, तो तुम कभी उसके बिना नहीं रहते।

इस पर सोचो: पवित्र आत्मा जो-जो काम करता है, उनमें से किस बात के लिए तुम आज सबसे अधिक धन्यवादी हो?

यह करके देखो: आज बाइबल पढ़ने या प्रार्थना करने से पहले, यह कहो: "पवित्र आत्मा, कृपया मुझे समझने और आज्ञा मानने में मदद कीजिए।"

प्रिय परमेश्वर, धन्यवाद कि आपने पवित्र आत्मा को भेजा, कि वह हर उस व्यक्ति के भीतर रहे जो यीशु पर भरोसा करता है। पवित्र आत्मा, धन्यवाद कि आप मेरे सहायक हैं। कृपया मुझे सत्य सिखाइए, परमेश्वर के वचन की याद दिलाइए, आज्ञा मानने की सामथ्य दीजिए, और जब मैं उदास होऊँ तब मुझे सांत्वना दीजिए। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 19 — परमेश्वर सुन रहा है

"मुझे पुकार, और मैं तुझे उत्तर दूँगा, और तुझे बड़ी-बड़ी और छिपी हुई बातें बताऊँगा, जिन्हें तू नहीं जानता।"
— यिर्मयाह 33:3

जब परमेश्वर ने ये शब्द कहे, तब भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह किसी शांत जगह पर नहीं बैठा था। वह बन्दी बना हुआ था। राजा को यह अच्छा नहीं लगता था कि यिर्मयाह परमेश्वर के विषय में क्या कह रहा है, इसलिए उसने उसे पहरेदारों के आँगन में बन्द करवा दिया। यिर्मयाह वहाँ से निकल नहीं सकता था। उसके नगर को शत्रुओं ने घेर रखा था। सब कुछ निराशाजनक लग रहा था।

परन्तु ठीक वहीं, उस सारी विपत्ति के बीच, परमेश्वर ने कहा: "मुझे पुकार, और मैं तुझे उत्तर दूँगा।"

प्रार्थना यही है। यह बस परमेश्वर के साथ बातचीत करना है। और यहाँ अद्भुत बात यह है: परमेश्वर *चाहता* है कि तू उससे बात करे। जब तू उसके पास आता है, तब वह झुँझलाता नहीं। वह इतना व्यस्त भी नहीं है। वह तुझे बुलाता है: "मुझे पुकार।"

कुछ लोग सोचते हैं कि प्रार्थना बड़ी आडम्बरपूर्ण लगनी चाहिए, जिसमें "हे प्रभो" और "हे देव" जैसे विशेष शब्द हों। ऐसा नहीं है। परमेश्वर साधारण शब्दों को भी समझता है। कुछ लोग सोचते हैं कि प्रार्थना केवल कलीसिया में या भोजन से पहले ही मायने रखती है। परन्तु तू कहीं भी प्रार्थना कर सकता है: बस में, नहाते समय, कक्षा की ओर चलते हुए, बिस्तर पर लेटे हुए। कुछ लोग सोचते हैं कि उन्हें अपनी आँखें बन्द करके हाथ जोड़ने ही पड़ते हैं। इससे ध्यान लगाने में मदद मिल सकती है, परन्तु परमेश्वर तुझे आँखें खुली होने पर भी सुनता है!

तू परमेश्वर से कुछ भी कह सकता है। तू उसका धन्यवाद कर सकता है, उससे सहायता माँग सकता है, उससे कह सकता है कि तुझे खेद है, उससे कह सकता है कि तू डरा हुआ है, या उससे अपने दिन के बारे में बता सकता है। वह पहले से ही सब कुछ जानता है, फिर भी

उसे तुझ से यह सब सुनना अच्छा लगता है, ठीक वैसे ही जैसे माता-पिता को अपने बच्चे की बातें सुनना अच्छा लगता है।

और परमेश्वर उत्तर देने की प्रतिज्ञा करता है। वह यह भी कहता है कि वह "तुझे बड़ी-बड़ी और छिपी हुई बातें बताएगा, जिन्हें तू नहीं जानता।" जब तू परमेश्वर के साथ बातचीत करता है, तब तू उसे और भी अच्छी तरह जानने लगता है, और वह तुझे ऐसी बातें सिखाता है जिन्हें तू अपने आप कभी न समझ पाता।

इस सप्ताह हम प्रार्थना के विषय में बहुत कुछ सीखेंगे। परन्तु यह सब यहीं से आरम्भ होता है: परमेश्वर सुन रहा है। इसलिए बातें करना आरम्भ कर।

इस पर सोच: तेरे लिए प्रार्थना करना किस कारण कठिन हो जाता है? यिर्मयाह 33:3 उन कारणों से क्या कहता है?

यह करके देख: आज एक "प्रार्थना-सैर" पर जा। अपने घर, आँगन या मोहल्ले में घूम, और जो कुछ तू देखे उसके विषय में परमेश्वर से बात कर।

प्रिय परमेश्वर, धन्यवाद कि तू मुझ से सुनना चाहता है। धन्यवाद कि मैं तुझे किसी भी समय और कहीं भी पुकार सकता हूँ, और तू उत्तर देगा। मुझे सिखा कि मैं हर दिन तुझ से बात करूँ। मुझे अपने विषय में बड़ी-बड़ी बातें दिखा जिन्हें मैं अभी तक नहीं जानता। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 20 — हमारे पिता

"हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो।"
— मत्ती 6:9-10

यीशु के चेले उन्हें हर समय प्रार्थना करते हुए देखते थे। वे सुबह तड़के प्रार्थना करते थे। वे पहाड़ पर रात भर प्रार्थना करते थे। वे बड़े निर्णयों से पहले प्रार्थना करते थे। इसमें अचरज नहीं कि एक दिन उन्होंने उनसे कहा, "हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखा" (लूका 11:1)।

यीशु ने उन्हें अपनाने के लिए एक नमूना दिया, और मत्ती ने इसे यीशु के प्रसिद्ध पहाड़ी उपदेश में लिखा है। जो उन्होंने सिखाया, उसे दो हज़ार वर्षों से संसार भर के मसीही प्रार्थना में दोहराते आए हैं। हम इसे **प्रभु की प्रार्थना** कहते हैं। आइए देखें कि यह कैसे आरम्भ होती है, क्योंकि आरम्भ हमें बहुत कुछ बताता है।

"हे हमारे पिता।" यीशु हमें यह कहकर आरम्भ करना सिखा सकते थे, "हे ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता।" और परमेश्वर वही है! परन्तु यीशु हमें परमेश्वर को **पिता** कहकर पुकारने का न्योता देते हैं। यदि तुमने यीशु पर भरोसा किया है, तो तुम परमेश्वर की सन्तान हो (दिन 14 याद है?), इसलिए तुम उनके पास वैसे ही आ सकते हो जैसे कोई बच्चा एक प्यार करने वाले पिता के पास दौड़कर जाता है। तुम्हें बड़े-बड़े शब्दों की आवश्यकता नहीं। तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं।

"जो स्वर्ग में है।" परन्तु वे कोई साधारण पिता नहीं हैं। वे स्वर्ग में हैं, अर्थात वे सब से ऊपर हैं और सब कुछ कर सकते हैं। इसलिए हम परमेश्वर के पास ऐसे किसी के रूप में आते हैं जो निकट भी है *और* महान भी। वे इतने निकट हैं कि एक फुसफुसाहट भी सुन लें, और इतने महान कि किसी भी बात को संभाल लें।

"तेरा नाम पवित्र माना जाए।" "पवित्र माना जाना" एक पुराना शब्द है जिसका अर्थ है *पवित्र समझा जाना*। हम यह माँग रहे हैं कि हर जगह के लोग, हमारे समेत, परमेश्वर के नाम

का आदर करें और देखें कि वे कितने अद्भुत हैं।

"तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो।" यह प्रार्थना करना साहस का काम है। इसका अर्थ है, *हे परमेश्वर, मैं तेरी राह चाहता हूँ, केवल अपनी राह नहीं।* अपनी किसी आवश्यकता के लिए माँगने से पहले, यीशु हमें यह सिखाते हैं कि हम इसकी चिन्ता करें कि परमेश्वर क्या चाहते हैं।

क्या तुमने ध्यान दिया? प्रभु की प्रार्थना का पहला भाग हमारे विषय में है ही नहीं। वह परमेश्वर के विषय में है। जब हम यह स्मरण करके आरम्भ करते हैं कि परमेश्वर कौन हैं, तो हमारी समस्याएँ मिट तो नहीं जातीं, परन्तु वे सिमटकर अपने सही आकार में आ जाती हैं।

कल हम देखेंगे कि आगे क्या आता है: अपनी आवश्यकताओं के लिए माँगना। परन्तु आज, बस ऊपर की ओर दृष्टि लगाकर अपनी प्रार्थना आरम्भ करने का अभ्यास करो।

इस पर विचार करो: परमेश्वर से "पिता" कहकर प्रार्थना करना, किसी ऐसे जन से प्रार्थना करने से कैसे भिन्न है जिसे तुम सचमुच जानते ही नहीं?

यह करके देखो: प्रभु की प्रार्थना को धीरे-धीरे, एक-एक पंक्ति करके प्रार्थना करो। हर पंक्ति के बाद रुककर अपने शब्दों में एक वाक्य जोड़ो।

हे स्वर्ग में रहने वाले हमारे पिता, धन्यवाद कि मैं तुझे पिता कहकर पुकार सकता हूँ। तू महान और पवित्र है, और तेरा नाम अद्भुत है। मैं चाहता हूँ कि तेरा राज्य आए और तेरी इच्छा पूरी हो — मेरे घर में, मेरे विद्यालय में और मेरे मन में, जैसे स्वर्ग में होती है। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 21 — प्रतिदिन की रोटी

"हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।"
— मत्ती 6:11 (IRV)

कल हमने सीखा कि प्रभु की प्रार्थना की शुरुआत परमेश्वर की ओर ऊपर देखने से होती है: वह कौन है और वह क्या चाहता है। आज हम अगले भाग पर आते हैं, जहाँ यीशु हमें सिखाते हैं कि जो हमें चाहिए उसके लिए परमेश्वर से माँगें।

"हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।"

बस कुछ ही आयतों पहले, यीशु ने एक अचरज भरी बात कही: "तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या-क्या आवश्यकताएँ है" (मत्ती 6:8)। तो अगर परमेश्वर पहले से ही जानता है, तो फिर माँगें क्यों?

क्योंकि प्रार्थना परमेश्वर को कोई जानकारी देने के बारे में नहीं है। यह **उस पर भरोसा करने** के बारे में है। जब तुम परमेश्वर से कुछ माँगते हो, तो तुम कह रहे होते हो, *मुझे तेरी ज़रूरत है। मेरे पास जो कुछ है, सब तुझी से मिला है।* यह ऐसा है जैसे कोई बच्चा अपने माता-पिता से खाने के लिए कहे। माता-पिता तो पहले से ही खाना बनाने की सोच रहे थे! पर माँगना यह दिखाता है कि बच्चा जानता है कि अच्छी चीज़ें कहाँ से आती हैं।

प्रतिदिन शब्द पर ध्यान दो। जब परमेश्वर के लोग मिस्र से निकलने के बाद जंगल में भटक रहे थे, तब उसने उन्हें मन्ना नाम का एक खास भोजन खिलाया। हर सुबह वह ज़मीन पर मिलता था। पर एक नियम था: सिर्फ़ आज भर के लिए ही इकट्ठा करना। अगर वे ज़्यादा जमा करने की कोशिश करते, तो वह सड़ जाता। परमेश्वर चाहता था कि वे एक-एक दिन करके उस पर भरोसा करना सीखें।

यीशु यहाँ यही सिखा रहे हैं। हमें अगले महीने या अगले साल की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। हम आज के लिए परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं, और फिर कल दोबारा उस पर भरोसा कर सकते हैं।

“रोटी” का मतलब सिर्फ़ रोटी नहीं है। इसका मतलब है वह सब कुछ जो हमें जीने के लिए चाहिए: भोजन, कपड़े, एक घर, सेहत, होमवर्क में मदद, किसी मुश्किल बातचीत के लिए हिम्मत, किसी कठिन दिन को पार करने की शक्ति। कोई भी ज़रूरत इतनी छोटी नहीं कि उसे परमेश्वर के पास न लाया जा सके। वह बड़ी बातों की *और* छोटी बातों की, दोनों की परवाह करता है।

यह प्रार्थना यह भी कहती है, “**हमें** दे,” न कि सिर्फ़ “**मुझे** दे।” जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम दूसरों की ज़रूरतों को भी याद रख सकते हैं, खासकर उन लोगों को जिनके पास काफ़ी नहीं है।

इस पर सोचो: आज तुम्हें किस चीज़ की ज़रूरत है? क्या तुमने उसके लिए परमेश्वर से माँगा है?

यह करके देखो: दो सूचियाँ बनाओ: “जो चीज़ें मुझे चाहिए” और “जो चीज़ें दूसरों को चाहिए।” आज दोनों सूचियों के लिए प्रार्थना करो।

प्रिय पिता, धन्यवाद कि मेरे माँगने से पहले ही तू जानता है कि मुझे क्या चाहिए। कृपया आज मुझे वह दे जो मुझे चाहिए: [उसे अपनी ज़रूरतें बता]। कृपया [किसी और की जिसकी कोई ज़रूरत है] देखभाल भी कर। मुझे एक-एक दिन करके तुझ पर भरोसा करना सिखा। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 22 — परमेश्वर से क्षमा माँगना

"हे परमेश्वर, अपनी करुणा के अनुसार मुझ पर दया कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे। मेरे अधर्म को धोकर मुझे शुद्ध कर, और मेरे पाप से मुझे स्वच्छ कर... हे परमेश्वर, मेरे भीतर एक शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मेरे भीतर एक स्थिर आत्मा नई कर दे।"
— भजन संहिता 51:1–2, 10 (IRV)

राजा दाऊद परमेश्वर से प्रेम रखता था। उसने बहुत से भजन लिखे। परन्तु एक बार दाऊद ने बहुत ही बुरा काम किया। उसने उसे छिपाने की कोशिश की, और इससे और भी बुरे काम हुए। बहुत समय तक वह ऐसे रहा मानो सब कुछ ठीक हो।

फिर परमेश्वर ने नातान नामक एक भविष्यद्वक्ता को दाऊद से बात करने के लिये भेजा। नातान ने दाऊद को यह देखने में सहायता दी कि उसने क्या किया है। और दाऊद ने कोई बहाना नहीं बनाया। उसने किसी और को दोष नहीं दिया। उसने कहा, "मैंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।" फिर उसने भजन 51 लिखा, जो परमेश्वर से क्षमा माँगने की एक प्रार्थना है।

इस प्रकार की प्रार्थना का एक बड़ा नाम है: **पाप-अंगीकार**। अंगीकार करने का अर्थ है अपने पाप के विषय में परमेश्वर से सहमत होना। तुम छिपाना बन्द कर देते हो, बहाना बनाना बन्द कर देते हो और परमेश्वर से सच बोल देते हो: *मैंने यह किया, और यह गलत था।*

यदि परमेश्वर पहले से ही जानता है, तो अंगीकार क्यों करें? क्योंकि पाप को छिपाना उँगली में चुभे काँटे के समान है। यदि तुम उसे भीतर ही रहने दो, तो वह लाल होकर दुखने लगता है। चंगा होने से पहले तुम्हें उसे निकालना ही पड़ता है। जब हम पाप को छिपाए रखते हैं, तो वह हमें भीतर ही भीतर चोट पहुँचाता है और हमारे तथा परमेश्वर के बीच आ जाता है। जब हम उसे खोलकर सामने ले आते हैं, तब परमेश्वर उसे चंगा कर सकता है।

दाऊद के प्रयोग किए हुए शब्दों को देखो। "मिटा दे।" "मुझे धोकर शुद्ध कर।" "मुझे स्वच्छ कर।" दाऊद जानता था कि वह स्वयं को शुद्ध नहीं कर सकता। केवल परमेश्वर ही कर

सकता था। और परमेश्वर ने सचमुच उसे क्षमा किया।

फिर दाऊद ने कुछ और भी माँगा: "मेरे भीतर एक शुद्ध हृदय उत्पन्न कर।" वह केवल बीते हुए के लिये क्षमा ही नहीं चाहता था। वह चाहता था कि परमेश्वर उसे बदल दे, ताकि वह वही काम बार-बार न करता रहे।

यदि तुमने यीशु पर विश्वास किया है, तो तुम पहले से ही परमेश्वर की क्षमा पाई हुई सन्तान हो। अंगीकार करना तुम्हें फिर से उसकी सन्तान नहीं बनाता। यह उसके साथ तुम्हारी मित्रता को निकट और सच्चा बनाए रखता है, ठीक वैसे ही जैसे अपने परिवार के किसी सदस्य से क्षमा माँगना।

दिन 15 को याद करो: जब परमेश्वर क्षमा करता है, तब वह तुम्हारे पाप को उतनी ही दूर कर देता है जितनी पूर्व, पश्चिम से दूर है।

इस पर सोचो: तुम्हारे विचार में लोग अपने पाप को अंगीकार करने के बजाय क्यों छिपाने की कोशिश करते हैं?

यह करके देखो: एक मिनट के लिये शान्त बैठो और परमेश्वर से पूछो, "क्या कोई ऐसी बात है जिसके लिये मुझे क्षमा माँगनी चाहिए?" फिर उसे बता दो। यदि तुमने किसी को चोट पहुँचाई हो, तो उससे भी क्षमा माँग लो।

प्रिय परमेश्वर, मुझ पर दया कर। मुझे [उसे बताओ कि तुमने क्या किया] का खेद है। कृपया मुझे धोकर शुद्ध कर। धन्यवाद कि यीशु मरा ताकि मुझे क्षमा मिल सके। मेरे भीतर एक शुद्ध हृदय उत्पन्न कर, और मुझे फिर वही न करने में सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 23 — धन्यवाद, परमेश्वर

"हर समय आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना करते रहो। हर परिस्थिति में धन्यवाद दो, क्योंकि मसीह यीशु में तुम्हारे लिये परमेश्वर की यही इच्छा है।"
— 1 थिस्सलुनीकियों 5:16–18 (IRV)

क्या तुमने कभी सोचा है, *परमेश्वर मुझसे क्या करवाना चाहता है?* बहुत से लोग यह प्रश्न पूछते हैं। बाइबल इसका एक उत्तर बड़ी स्पष्टता से देती है: "हर परिस्थिति में धन्यवाद दो, क्योंकि तुम्हारे लिये परमेश्वर की यही इच्छा है।"

ध्यान दो कि यह क्या नहीं कहती। यह यह नहीं कहती कि हर परिस्थिति *के लिये* धन्यवाद दो। तुम्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं, "धन्यवाद, परमेश्वर, कि मेरे दादाजी बीमार हैं," या "धन्यवाद कि मैं अपनी परीक्षा में असफल हो गया।" ये बातें कठिन हैं, और परमेश्वर यह जानता है।

परन्तु यह यह अवश्य कहती है कि हर परिस्थिति *में* धन्यवाद दो। बुरे दिन में भी परमेश्वर का धन्यवाद करने के लिये सदा कुछ न कुछ होता है। वह अब भी तुम्हारे साथ है। वह अब भी तुमसे प्रेम करता है। तुम अब भी उसकी सन्तान हो। और वह अब भी काम कर रहा है, चाहे तुम उसे देख न पाओ।

इन शब्दों को लिखने वाला मनुष्य पौलुस था। उसका जीवन सरल नहीं था। उसे पीटा गया, बन्दीगृह में डाला गया, तीन बार उसका जहाज़ टूटा, और उसे नगर-नगर से खदेड़ा गया। फिर भी उसकी पत्रियाँ धन्यवादों से भरी हुई हैं। पौलुस ने यह सीख लिया था कि धन्यवाद इस पर निर्भर नहीं करता कि तुम्हारे चारों ओर क्या हो रहा है। यह इस पर निर्भर करता है कि परमेश्वर कौन है।

एक भेद सुनो: धन्यवादी होना तुम्हें बदल देता है। जब तुम शिकायत करते हो, तो तुम्हें शिकायत करने के लिये और भी बातें दिखने लगती हैं। जब तुम धन्यवाद देते हो, तो तुम्हें

परमेश्वर के और भी उपहार दिखने लगते हैं। कुड़कुड़ाता हृदय भारी हृदय होता है। धन्यवादी हृदय आनन्दित हृदय होता है।

पौलुस यह भी कहता है, "निरन्तर प्रार्थना करते रहो।" इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हें दिन के हर पल प्रार्थना करनी है। इसका अर्थ है दिन भर परमेश्वर के साथ बातचीत को चलते रहने देना: जब कुछ अच्छा हो तब झट से एक "धन्यवाद," जब कुछ कठिन हो तब झट से एक "मेरी सहायता कर।" धन्यवाद और प्रार्थना साथ-साथ चलते हैं।

दिन 1 याद है? जड़ पकड़े हुए व्यक्ति में "धन्यवाद उमड़ता रहता है।" तुम्हारी जड़ें जितनी गहरी बढ़ेंगी, तुम उतने ही अधिक धन्यवादी बनोगे।

इस पर सोचो: अभी तुम्हारे जीवन में कौन-सी बात कठिन है? उसमें भी तुम किस एक बात के लिये परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हो?

यह करके देखो: उन दस बातों की एक सूची बनाओ जिनके लिये तुम धन्यवादी हो। फिर अपनी सूची में से कम से कम एक व्यक्ति को धन्यवाद कहो।

प्रिय परमेश्वर, धन्यवाद! [कुछ बातों के नाम लो] के लिये तेरा धन्यवाद। कठिन दिनों में भी तेरा धन्यवाद करने के कारण खोजने में मेरी सहायता कर। मुझे दिन भर तुझसे बातें करना सिखा। मेरे हृदय को धन्यवाद से उमड़ने दे। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 24 — जब परमेश्वर कहता है "ठहर जा"

"फिर भी मुझे निश्चय है कि मैं जीवितों की भूमि में यहोवा की भलाई देखूँगा। यहोवा की बाट धीरज से जोहता रह; हियाव बाँध और दृढ़ हो। यहोवा की बाट धीरज से जोहता रह!"

— भजन संहिता 27:13–14 (IRV)

प्रतीक्षा करना कठिन है। क्रिसमस की सुबह की प्रतीक्षा। लम्बी पंक्ति में खड़े रहकर प्रतीक्षा। टीम की चयन-परीक्षा का उत्तर सुनने की प्रतीक्षा। और लम्बा होने की प्रतीक्षा। कभी-कभी ऐसा लगता है मानो पूरा संसार कह रहा हो, "अभी नहीं।"

कभी-कभी ऐसा लगता है कि परमेश्वर भी यही कहता है। तुम प्रार्थना पर प्रार्थना करते हो, और कुछ होता हुआ नहीं दिखता। क्या परमेश्वर ने सुना नहीं? क्या उसे कोई परवाह नहीं?

एक महत्वपूर्ण बात जान लो: परमेश्वर सदा तुम्हारी प्रार्थनाएँ सुनता है, और वह सदा उत्तर देता है। परन्तु उसका उत्तर सदा "हाँ" नहीं होता। कभी-कभी वह "नहीं" होता है, क्योंकि वह कोई उससे भी अच्छी बात जानता है। और कभी-कभी वह होता है "**ठहर जा**।"

अब्राहम के विषय में सोचो। परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी पत्नी सारा से प्रतिज्ञा की थी कि उनके एक पुत्र होगा। परन्तु अब्राहम तो पहले ही 75 वर्ष का था! फिर वे प्रतीक्षा करते रहे। और प्रतीक्षा करते रहे। और प्रतीक्षा करते रहे। उन्होंने **25 वर्ष** प्रतीक्षा की। जब आखिरकार उनका पुत्र इसहाक जन्मा, तब अब्राहम 100 वर्ष का था। परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की, ठीक अपने ही समय पर।

दाऊद ने भजन 27 एक कठिन और डरावने समय में लिखा। देखो कि उसने प्रतीक्षा करने का कैसा ढंग चुना। पहला, उसे "यहोवा की भलाई देखने का निश्चय" था। उसने भरोसा रखा कि परमेश्वर की भलाई आ रही है, चाहे वह अभी उसे देख न पाए।

दूसरा, उसने कहा कि प्रतीक्षा करते समय "हियाव बाँध और दृढ़ हो।" यह दिलचस्प है, है न? प्रतीक्षा करने में साहस लगता है! जब कुछ होता हुआ न दिखे तब भी परमेश्वर पर

भरोसा बनाए रखना वीरता है। हार मानने के बजाय प्रार्थना करते रहना वीरता है।

प्रतीक्षा व्यर्थ बिताया समय नहीं है। जब तुम प्रतीक्षा करते हो, तब परमेश्वर तुम्हारे भीतर कुछ बढ़ा रहा होता है: धीरज, भरोसा और और भी मजबूत विश्वास। भूमि में गड़ा हुआ बीज ऐसा दिखता है मानो कुछ नहीं हो रहा। परन्तु मिट्टी के नीचे जड़ें बढ़ रही होती हैं।

इसलिये यदि तुम किसी बात के लिये परमेश्वर की बाट जोह रहे हो, तो हार मत मानो। प्रार्थना करते रहो। भरोसा करते रहो। उसने तुम्हें भुलाया नहीं है।

इस पर सोचो: क्या कोई ऐसी प्रार्थना है जिसका उत्तर तुम परमेश्वर से पाने की बाट जोह रहे हो? प्रतीक्षा करते समय तुम कैसे "हियाव बाँधकर दृढ़" रह सकते हो?

यह करके देखो: कोई ऐसी प्रार्थना और आज की तारीख लिख लो जिसका तुम उत्तर पाने की बाट जोह रहे हो। उसके विषय में प्रार्थना करते रहो। जब परमेश्वर उत्तर दे, तब लिखो कि उसने कैसे दिया।

प्रिय परमेश्वर, प्रतीक्षा करना कठिन है। मुझे भरोसा करने में सहायता कर कि तू मुझे सुनता है और हर बात का सबसे अच्छा समय जानता है। प्रतीक्षा करते समय मुझे हियाव और दृढ़ता दे। मुझे विश्वास है कि मैं तेरी भलाई देखूँगा। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 25 — मेरे पैरों के लिये एक दीपक

"तेरा वचन मेरे पैरों के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।"
— भजन संहिता 119:105 (IRV)

क्या तुम कभी शिविर लगाने गए हो और तुम्हें रात में जंगल में से होकर चलना पड़ा हो? टॉर्च के बिना यह डरावना होता है। तुम्हें न वे जड़ें दिखती हैं जिनसे तुम ठोकर खा सकते हो, न मार्ग के पत्थर, न यह कि पगडंडी किधर जाती है। परन्तु टॉर्च जलाओ, और अचानक तुम्हें दिखने लगता है कि पैर कहाँ रखना है।

बाइबल कहती है कि परमेश्वर का वचन ऐसा ही है। "तेरा वचन मेरे पैरों के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।"

बाइबल के समय में लोगों के पास टॉर्च नहीं होती थी। वे तेल के छोटे-छोटे दीपक साथ रखते थे। ये दीपक पूरे जंगल को उजाला नहीं देते थे। वे केवल तुम्हारे सामने के अगले कुछ ही कदमों को उजाला देते थे। परन्तु इतना ही पर्याप्त था। तुम एक कदम बढ़ाते, और उजियाला तुम्हें अगला कदम दिखा देता।

प्राय: बाइबल हमारे जीवन में इसी प्रकार काम करती है। यह तुम्हें ठीक-ठीक नहीं बताती कि तुम्हारा कौन-सा काम-धन्धा होगा, पाँच वर्ष बाद तुम्हारे मित्र कौन होंगे, या अगले सप्ताह क्या होने वाला है। परन्तु यह तुम्हें अगला कदम दिखाती है: आज अपने भाई या बहन के साथ कैसा व्यवहार करना, प्रलोभन में पड़ने पर क्या करना, किसी मित्र के उदास होने पर क्या कहना, और चिन्ता में पड़ने पर परमेश्वर पर कैसे भरोसा रखना।

संसार अन्धकारमय और उलझन भरा लग सकता है। सही और गलत के विषय में हर किसी की अपनी राय है, और राय बदलती ही रहती है। परन्तु परमेश्वर का वचन वैसा ही बना रहता है, और वह सदा सही मार्ग की ओर संकेत करता है।

इसी कारण बाइबल पढ़ना उन सबसे महत्वपूर्ण आदतों में से एक है जिन्हें तुम बना सकते हो। यह केवल एक पुरानी पुस्तक नहीं है। यह परमेश्वर का तुमसे बोलना है। तुम इसे

जितना अधिक पढ़ोगे, तुम्हारे पास उतना ही अधिक उजियाला होगा।

यदि तुम्हें समझ न आए कि कहाँ से आरम्भ करें, तो मरकुस का सुसमाचार पढ़कर देखो। यह छोटा और तेज़ चाल वाला है, और पूरा का पूरा यीशु के विषय में है। तुम प्रतिदिन एक अध्याय पढ़ सकते हो। लगभग दो सप्ताह में तुम बाइबल की एक पूरी पुस्तक पढ़ डालोगे!

इस पर सोचो: अभी तुम्हारे जीवन में कौन-सी ऐसी परिस्थिति है जिसमें तुम्हें अगला कदम दिखाने के लिये परमेश्वर के उजियाले की आवश्यकता है?

यह करके देखो: इन 30 दिनों के समाप्त होने के बाद के लिये बाइबल पढ़ने का एक समय चुनो। उसे लिख लो। तुम कल मरकुस 1 से आरम्भ कर सकते हो।

प्रिय परमेश्वर, हमें अपना वचन देने के लिये तेरा धन्यवाद। जब मुझे न सूझे कि किधर जाऊँ, तब बाइबल मेरे पैरों के लिये दीपक बने। मुझमें इसे हर दिन पढ़ने की इच्छा जगा। मुझे अगला कदम दिखा, और उस पर चलने में मेरी सहायता कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 26 — परमेश्वर के वचन को छिपाना

"जवान अपनी चाल को कैसे शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार उसकी चौकसी करने से। मैंने अपने पूरे मन से तुझे ढूँढ़ा है; मुझे तेरी आज्ञाओं से भटकने न दे। मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।"
— भजन संहिता 119:9–11 (IRV)

आज के वचनों के आरम्भ में दिए गए प्रश्न को देखो: "जवान अपनी चाल को कैसे शुद्ध रखे?" यह प्रश्न तुम्हारे लिये है, चाहे तुम लड़का हो या लड़की! कोई जवान परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले ढंग से कैसे जी सकता है, विशेषकर जब चारों ओर इतने सारे प्रलोभन हों?

उत्तर यह है: "तेरे वचन के अनुसार उसकी चौकसी करने से।" और फिर: "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है।"

परमेश्वर के वचन को **छिपाना** का अर्थ यह नहीं कि उसे दूसरों से गुप्त रखना। इसका अर्थ है उसे अपने भीतर गहराई में संचित करना, ठीक वैसे ही जैसे तुम किसी खज़ाने को किसी सुरक्षित स्थान में रखोगे। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है उसे **कण्ठस्थ करना**।

बाइबल को कण्ठस्थ क्यों करें? क्योंकि वह सदा तुम्हारे हाथों में नहीं होगी। जब तुम किसी मित्र के घर रात बिताने गए हो और कोई ऐसा कुछ देखने का सुझाव दे जिसे तुम जानते हो कि तुम्हें नहीं देखना चाहिए, तब सम्भवतः तुम्हारे सामने बाइबल खुली नहीं होगी। जब तुम रात में डर के मारे जागते पड़े हो, तब शायद तुम कुछ ढूँढ़कर पढ़ न पाओ। परन्तु यदि तुमने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छिपा रखा है, तो वह सदा तुम्हारे साथ रहता है।

यीशु ने ऐसा ही किया। जब शैतान ने जंगल में यीशु की परीक्षा ली, तब यीशु ने बहस नहीं की। हर बार उसने पवित्रशास्त्र के वचन कहकर उत्तर दिया: "लिखा है..." परमेश्वर का वचन उसका हथियार था, और वह तुम्हारा भी हो सकता है।

कण्ठस्थ करने के लिये कुछ सुझाव ये हैं:

- **कोई छोटा वचन चुनो।** एक या दो वाक्यों से आरम्भ करो।
- **उसे ऊँचे स्वर में कहो** दिन में कई बार, सन्दर्भ सहित।
- **उसे लिख लो।** उसे किसी चिपकाने वाली पर्ची पर, अपने स्नानघर के दर्पण पर, या अपने दरवाज़े के पीछे लगा दो।
- **उसका गीत बना लो।** बहुत से वचन धुन के साथ याद रखना आसान हो जाते हैं।
- **किसी के साथ अभ्यास करो।** बारी-बारी से किसी माता-पिता या मित्र को उसे सुनाओ।

इस पुस्तक में तुम कुछ बेहतरीन वचनों से पहले ही मिल चुके हो। तुम्हें उनमें से कितने याद हैं?

इस पर सोचो: बाइबल का कोई वचन तुम्हारे हृदय में होना तुम्हारी सबसे अधिक सहायता कब कर सकता है?

यह करके देखो: आज भजन संहिता 119:11 कण्ठस्थ करो: "मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, ताकि मैं तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" उसे रात के भोजन पर किसी को सुनाओ।

प्रिय परमेश्वर, तेरे वचन के लिये तेरा धन्यवाद। मुझे उसे अपने हृदय में छिपाने में सहायता कर, ताकि वह सदा मेरे साथ रहे। जब मैं प्रलोभन में पड़ूँ, तब सही वचन मेरे मन में ले आ। मैं अपने पूरे मन से तुझे जानना और तेरे पीछे चलना चाहता हूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 27 — केवल सुनो मत — करो भी

"वचन पर चलने वाले बनो, केवल सुनने वाले ही नहीं। नहीं तो तुम अपने आप को धोखा देते हो। क्योंकि जो कोई वचन को सुनता है, परन्तु उस पर चलता नहीं, वह उस मनुष्य के समान है जो अपना मुख दर्पण में देखता है, और अपने आप को देखकर चला जाता है और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था।"
— याकूब 1:22-24 (IRV)

कल्पना करो कि स्कूल जाने से पहले तुम दर्पण में देखते हो और तुम्हें अपने दाँतों में पालक का एक बड़ा टुकड़ा फँसा हुआ दिखता है। क्या तुम यों ही चले जाओगे और उसे भूल जाओगे? बिलकुल नहीं! दर्पण में देखने का पूरा उद्देश्य ही यह है कि जो तुम्हें दिखे उसे ठीक करो।

याकूब कहता है कि बाइबल एक दर्पण के समान है। जब हम उसे पढ़ते हैं, तब वह हमें दिखाती है कि हम सचमुच कैसे हैं और परमेश्वर हमसे क्या करवाना चाहता है। परन्तु यदि हम उसे पढ़कर, सिर हिलाकर, बिना कुछ बदले चले जाएँ, तो यह उस पालक को देखकर उसे दिन भर वहीं छोड़ देने के समान है।

पिछले 26 दिनों में तुमने बहुत कुछ सीखा है। तुमने सीखा है कि परमेश्वर पवित्र और प्रेममय है। तुमने यीशु के विषय का शुभ समाचार सीखा है। तुमने सीखा है कि मसीह में तुम कौन हो, प्रार्थना कैसे करनी है और बाइबल क्यों मायने रखती है। यह बहुत अच्छा है! परन्तु याकूब कहता है कि केवल जानना ही पर्याप्त नहीं। परमेश्वर चाहता है कि हम जो सीखते हैं उसे **करें** भी।

याकूब तो यहाँ तक कहता है कि यदि तुम केवल सुनते ही हो, तो "तुम अपने आप को धोखा देते हो।" तुम स्वयं को यह सोचकर धोखा दे सकते हो कि तुम बढ़ रहे हो, केवल इसलिये कि तुम बाइबल की बहुत-सी बातें जानते हो। परन्तु सच्ची वृद्धि इसमें दिखती है कि तुम कैसे जीते हो।

यीशु ने भी इस विषय में एक कहानी सुनाई। उसने कहा कि जो व्यक्ति उसके वचनों को सुनकर उन पर चलता है, वह उस बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान है जो अपना घर ठोस चट्टान पर बनाता है। जब आँधी आती है, तब घर खड़ा रहता है।

परमेश्वर के वचन पर चलना सदा आसान नहीं होता। इसका अर्थ हो सकता है किसी ऐसे को क्षमा करना जिसने तुम्हें चोट पहुँचाई हो, जब झूठ बोलना आसान हो तब भी सच बोलना, घर में बिना शिकायत किए हाथ बँटाना, या किसी ऐसे के साथ दया दिखाना जिसे कोई पसन्द नहीं करता। परन्तु हर बार जब तुम आज्ञा मानते हो, तब तुम्हारी जड़ें थोड़ी और गहरी बढ़ती हैं।

तुम्हें यह सब एक साथ करने की आवश्यकता नहीं। बस एक बात से आरम्भ करो।

इस पर सोचो: इस पुस्तक में तुमने जो कुछ सीखा है, उसमें से ऐसी कौन-सी एक बात है जिसे तुम जानते हो कि परमेश्वर तुमसे करवाना चाहता है, परन्तु तुमने अब तक नहीं की?

यह करके देखो: इन 27 दिनों में से एक बात चुनो और आज उसे करो। फिर किसी को बताओ कि तुमने क्या किया।

प्रिय परमेश्वर, मैं केवल तेरे विषय में जानना ही नहीं चाहता। मैं तेरी आज्ञा मानना चाहता हूँ। मुझे तेरे वचन पर चलने वाला बनने में सहायता कर, केवल सुनने वाला ही नहीं। मुझे आज करने के लिये एक बात दिखा, और उसे करने का साहस दे। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 28 — साथ मिलकर बढ़ना

"और आओ, हम इस बात पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को प्रेम और भले कामों के लिये कैसे उभारें। हम एक साथ इकट्ठे होना न छोड़ें, जैसा कि कुछ लोगों की रीति हो गई है, परन्तु हम एक दूसरे को उत्साहित करें, और जितना तुम उस दिन को निकट आते देखते हो, उतना ही अधिक।"
— इब्रानियों 10:24–25 (IRV)

कैलिफोर्निया के विशालकाय रेडवुड पेड़ पृथ्वी के सबसे ऊँचे जीवित प्राणियों में से हैं। कुछ तो 30 मंज़िली इमारत से भी ऊँचे हैं! तुम शायद सोचोगे कि इतने बड़े पेड़ों को बहुत ही गहरी जड़ों की आवश्यकता होगी। परन्तु वास्तव में रेडवुड की जड़ें काफ़ी उथली होती हैं।

तो फिर वे आँधियों में खड़े कैसे रहते हैं? उनकी जड़ें चौड़ाई में दूर तक फैलती हैं और आसपास के पेड़ों की जड़ों के साथ **आपस में उलझ जाती** हैं। भूमि के नीचे पूरा वन एक दूसरे को थामे रहता है। अकेला एक रेडवुड गिर सकता है। परन्तु रेडवुड का एक वन हज़ारों वर्षों तक मजबूती से खड़ा रहता है।

परमेश्वर ने अपने लोगों को ऐसा ही बनाया है। तुम्हें बिलकुल अकेले यीशु के पीछे चलने के लिये नहीं बनाया गया। इसी कारण परमेश्वर ने हमें **कलीसिया** दी।

कलीसिया केवल एक इमारत नहीं है। यह परमेश्वर का परिवार है: हर उम्र के लोग जो यीशु के हैं, जो आराधना करने, सीखने और एक दूसरे की सहायता करने के लिये एक साथ इकट्ठे होते हैं। और तुम उसका एक महत्वपूर्ण भाग हो, केवल बड़े होने पर ही नहीं, वरन अभी।

इब्रानियों हमें एक दूसरे के लिये करने को दो काम देती है।

एक दूसरे को उभारो। महमेज़ घोड़े को चलाने के लिये उसे कोंचती है। यह सुनने में मज़ेदार लगता है, परन्तु इसका अर्थ है कि हम एक दूसरे को चलते रहने में सहायता देते हैं:

“चलो, तुम कर सकते हो!” जब कोई मित्र परमेश्वर को छोड़ देने की सोच रहा हो, तब तुम उसका हौसला बढ़ा सकते हो।

एक दूसरे को उत्साहित करो। हर किसी के जीवन में कठिन दिन आते हैं। जब तुम किसी को उदास या जूझते हुए देखो, तब एक दयालु वचन या एक प्रार्थना तुम्हारी सोच से कहीं अधिक सहायता कर सकती है।

लेखक यह भी कहता है, “हम एक साथ इकट्ठे होना न छोड़ें।” कुछ लोग व्यस्त होने या ऊब जाने के कारण कलीसिया जाना बन्द कर देते हैं। परन्तु जब तुम परमेश्वर के परिवार से दूर हट जाते हो, तब तुम्हारी जड़ें सूख सकती हैं। जब तुम जुड़े रहते हो, तब तुम साथ मिलकर और भी मजबूत बनते हो।

इस पर सोचो: तुम्हारी कलीसिया में ऐसा कौन है जो तुम्हें बढ़ने में सहायता देता है? ऐसा कौन है जिसे तुम उत्साहित कर सकते हो?

यह करके देखो: इस सप्ताह कलीसिया में (या किसी मसीही मित्र के साथ) किसी को उत्साहित करो। उन्हें कोई ऐसी बात बताओ जो तुम्हें उनके विषय में अच्छी लगती है, या पूछो कि तुम उनके लिये कैसे प्रार्थना कर सकते हो।

प्रिय परमेश्वर, मेरे कलीसिया-परिवार के लिये तेरा धन्यवाद। धन्यवाद कि मुझे अकेले बढ़ना नहीं पड़ता। मुझे दूसरों को उत्साहित करने और प्रेम तथा भले कामों के लिये उनका हौसला बढ़ाने में सहायता कर। मुझे तेरे लोगों से जुड़े रहने में सहायता कर, जैसे जड़ें एक दूसरे को थामे रहती हैं। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 29 — प्रभु के लिये गाओ

"आओ, हम यहोवा के लिये आनन्द से गाएँ; अपने उद्धार की चट्टान के लिये जयजयकार करें! हम धन्यवाद के साथ उसके सम्मुख आएँ; गीत गाकर उसके लिये आनन्द का ऊँचा शब्द करें। क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।"

— भजन संहिता 95:1–3 (IRV)

जब तुम्हारी मनपसन्द टीम जीत का गोल करती है, तब क्या होता है? लोग उछल पड़ते हैं, जयजयकार करते हैं, ताली बजाते हैं और चिल्लाते हैं! किसी को उन्हें कहना नहीं पड़ता। जब कोई बात सचमुच महान होती है, तब उत्सव मनाना अपने आप आ जाता है।

आराधना यही है: यह उत्सव मनाना कि परमेश्वर कितना महान है। भजन 95 हमें बुलाता है: "आओ, हम यहोवा के लिये आनन्द से गाएँ!" शब्दों को देखो: गाओ, जयजयकार करो, आनन्द, आनन्द का ऊँचा शब्द। आराधना का उबाऊ होना अभिप्रेत नहीं है!

हम परमेश्वर की आराधना क्यों करें? भजन हमें बताता है: "क्योंकि यहोवा महान परमेश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।" इस पुस्तक में तुमने जो कुछ सीखा है, उस सब पर फिर से सोचो। परमेश्वर ने पूरी सृष्टि बनाई। वह हर तारे का नाम रखता है। वह पवित्र, पवित्र, पवित्र है। उसने पहले हमसे प्रेम किया और हमें बचाने के लिये यीशु को भेजा। वह हमें क्षमा करता है, हमें गोद लेता है, हमें कभी नहीं छोड़ता और हर प्रार्थना सुनता है। ऐसा ही परमेश्वर है जिसके विषय में गाना चाहिए!

भजन परमेश्वर को "हमारे उद्धार की चट्टान" भी कहता है। चट्टान ठोस और मजबूत होती है। तुम उस पर खड़े हो सकते हो और वह हिलती नहीं। परमेश्वर ही वह है जिसने हमें बचाया, और वही है जिस पर हम खड़े रह सकते हैं।

यह शुभ समाचार है: परमेश्वर की आराधना करने के लिये तुम्हें एक बढ़िया गायक होने की आवश्यकता नहीं। "आनन्द का ऊँचा शब्द करो" का अर्थ है कि परमेश्वर तुम्हारी आवाज़

से अधिक तुम्हारे हृदय की परवाह करता है। परमेश्वर के प्रेम से भरे हृदय के साथ बेसुरा गाता हुआ एक बच्चा भी उसके लिये सुन्दर संगीत रच रहा होता है।

और आराधना केवल गाना ही नहीं है। तुम प्रार्थना करके, धन्यवाद देकर, उसकी आज्ञा मानकर और अपने गुणों को उसके लिये काम में लाकर परमेश्वर की आराधना कर सकते हो। तुम अपना गृहकार्य या घर के काम अच्छे मन से करके भी उसकी आराधना कर सकते हो, क्योंकि तुम उसे उसी के लिये कर रहे हो। तुम्हारा पूरा जीवन आराधना का एक गीत बन सकता है।

परन्तु गाना एक विशेष उपहार है। जब परमेश्वर के लोग साथ मिलकर गाते हैं, तब यह स्वर्ग की एक छोटी-सी झलक के समान होता है।

इस पर सोचो: परमेश्वर के विषय में ऐसी कौन-सी एक बात है जो तुम्हारे मन में उसका उत्सव मनाने की इच्छा जगाती है?

यह करके देखो: आज कोई आराधना का गीत ऊँचे स्वर में गाओ। या परमेश्वर ने तुम्हारे लिये जो कुछ किया है, उसके विषय में उसके लिये अपना खुद का गीत बना लो।

प्रिय परमेश्वर, तू महान परमेश्वर और महान राजा है! तू मेरे उद्धार की चट्टान है। मैं तेरे लिये आनन्द से गाना चाहता हूँ। तूने मेरे लिये जो कुछ किया है, उस सब के लिये तेरा धन्यवाद। मेरा पूरा जीवन तेरे लिये आराधना का एक गीत बने। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 30 — जल के किनारे एक वृक्ष

"परन्तु धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसका आसरा यहोवा है। वह उस वृक्ष के समान होगा जो जल के किनारे लगाया गया हो, और अपनी जड़ें नदी की ओर फैलाता हो। जब लू चलेगी तब भी उसे कुछ भय न होगा, और उसके पत्ते सदा हरे रहेंगे। सूखे के वर्ष में भी वह चिन्ता न करेगा और न फल लाना छोड़ेगा।"
— यिर्मयाह 17:7-8

दो पौधों की कल्पना करो। पहला एक छोटी, दुबली-पतली झाड़ी है जो तपते हुए रेगिस्तान के बीच में है। वहाँ आस-पास कहीं पानी नहीं है। उसके पत्ते भूरे और सूखकर कुरकुरे हो गए हैं। जब कोई गरम, सूखी गर्मी आती है, तो वह मुश्किल से ही बच पाती है।

दूसरा एक बड़ा, घना पेड़ है जो ठीक एक नदी के किनारे उग रहा है। उसकी जड़ें नीचे पानी तक पहुँचती हैं। जब गर्मी की तपन आती है, तब भी कोई फ़र्क नहीं पड़ता। पेड़ पीता रहता है। उसके पत्ते हरे बने रहते हैं। वह साल-दर-साल फल लाता रहता है।

यिर्मयाह इन दो चित्रों के द्वारा दो प्रकार के लोगों का वर्णन करता है। आज के वचनों से ठीक पहले, वह उस व्यक्ति का वर्णन करता है जो केवल अपने आप पर या दूसरे लोगों पर भरोसा रखता है—रेगिस्तान की उस सूखी झाड़ी के समान। परन्तु जो व्यक्ति **यहोवा पर भरोसा रखता है**, वह जल के किनारे लगे वृक्ष के समान है।

देखो कि वह वृक्ष कैसा है:

- वह "अपनी जड़ें नदी की ओर फैलाता है।" वह परमेश्वर की ओर पहुँचता रहता है।
- वह "जब लू चलती है तब भी नहीं डरता।" कठिन समय फिर भी आते हैं, पर वह डरता नहीं।

- "उसके पत्ते सदा हरे रहते हैं।" वह जीवित और स्वस्थ बना रहता है, तब भी जब दूसरे सूख जाते हैं।
- वह फल लाना कभी नहीं छोड़ता। उसका जीवन भलाई करता रहता है।

परमेश्वर चाहता है कि तुम इसी प्रकार के व्यक्ति बनो। और इन 30 दिनों के दौरान, तुमने ठीक यही किया है: अपनी जड़ें नदी की ओर फैलाई हैं।

पर सबसे महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि तुमने क्या सीखा। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि **तुम किस पर भरोसा रखते हो**। "धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसका आसरा यहोवा है।" उस पर भरोसा रखते रहो। उसकी ओर पहुँचते रहो। तुम्हारी जड़ें और गहरी होती जाएँगी।

और यह रोमांचक यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है। पुस्तक 2 में, तुम यीशु से और भी करीब से मिलोगे।

इस पर सोचो: इस पुस्तक का कौन-सा दिन तुम्हारे लिए सबसे अधिक सहायक रहा? क्यों?

यह करके देखो: पुस्तक या अपनी नोटबुक को फिर से पलटकर देखो। अपना सबसे प्रिय वचन और जो सबसे अच्छी बात तुमने सीखी, उसे लिख लो। फिर किसी को दिखाओ।

प्रिय परमेश्वर, इन 30 दिनों के लिए तेरा धन्यवाद। जो कुछ तूने मुझे सिखाया, उस सब के लिए तेरा धन्यवाद। मुझे जल के किनारे लगे वृक्ष के समान बना: जो सदा तेरी ओर पहुँचता रहे, कठिन समयों से न डरे और सदा फल लाता रहे। हे प्रभु, मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मेरी जड़ों को तुझ में गहरी बढ़ने दे। यीशु के नाम में, आमीन।

निष्कर्ष: तुम रोपे जा चुके हो — बढ़ते रहो

तुमने कर दिखाया! तीस दिन। एक पल रुककर देखो कि तुम कितनी दूर आ चुके हो।

तुमने सीखा कि **परमेश्वर** तारों से भी महान है, पूर्ण रूप से पवित्र, प्रेम से भरपूर और कभी न बदलने वाला। तुमने **अब तक का सबसे अच्छा समाचार** सीखा: कि यद्यपि पाप ने परमेश्वर के साथ हमारी मित्रता को तोड़ दिया था, फिर भी यीशु आए, हमारे लिए क्रूस पर मरे और फिर जी उठे, ताकि जो कोई उन पर भरोसा करे वह क्षमा पाए और नया बन जाए। तुमने सीखा कि **तुम कौन हो**: उद्देश्य से बनाए गए, परमेश्वर की सन्तान, क्षमा किए हुए, कभी अकेले नहीं। तुमने **परमेश्वर से बातें करना** अपने पिता के रूप में सीखा। और तुमने सीखा कि **गहराई में कैसे बढ़ना** है — बाइबल के द्वारा, आज्ञा मानने के द्वारा, कलीसिया और आराधना के द्वारा।

यह तो बहुत सारी जड़ें हुईं!

पर जड़ों के बारे में एक बात है: वे बढ़ना कभी नहीं छोड़तीं। कोई पेड़ यह नहीं कहता, "अच्छा, मैं काफ़ी बढ़ चुका हूँ। अब मेरा काम पूरा हो गया।" जब तक वह जीवित है, वह और गहराई तक पहुँचता रहता है। और तुम्हारे तथा परमेश्वर के बीच भी ऐसा ही है। ये 30 दिन कोई अन्तिम रेखा नहीं थे। ये तो एक आरम्भिक रेखा थे।

क्या तुम्हें दिन 30 का वचन याद है?

> *"वह उस वृक्ष के समान है जो जल के किनारे लगाया गया हो, और अपनी जड़ें नदी की ओर फैलाता हो। जब लू लगेगी तब उसे डर न होगा, और उसके पत्ते सदा हरे रहेंगे।"*
>
> *— यिर्मयाह 17:8*

जब तुम परमेश्वर पर भरोसा करते हो तो यही तुम हो। लू किसी न किसी दिन आएगी: एक कठिन वर्ष, टूटी हुई मित्रता, कोई डरावना बदलाव। पर जल के किनारे लगे पेड़ को डरने की

ज़रूरत नहीं। उसकी जड़ें पहले से ही नदी की ओर पहुँच रही हैं।

यदि तुमने अब तक यीशु पर भरोसा नहीं किया

हो सकता है तुमने क्रूस और खाली कब्र के बारे में पढ़ा हो, और तुम इस पर सोचते तो रहे हो पर अब तक यीशु पर भरोसा नहीं किया। तुम्हें रुकने की ज़रूरत नहीं। तुम अभी इसी समय परमेश्वर से बात कर सकते हो — अपने ही शब्दों में, या कुछ इस तरह:

हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि मैंने पाप किया है, और मुझे इसका खेद है। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरे और फिर जी उठे। मैं उन्हें अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करना चाहता हूँ, और अपने प्रभु के रूप में उनके पीछे चलना चाहता हूँ। मुझे क्षमा करने और अपनी सन्तान बनाने के लिए तेरा धन्यवाद। आमीन।

यदि तुमने ऐसी प्रार्थना की, तो किसी को बताओ! अपने माता-पिता को, किसी पासबान को, या किसी मसीही मित्र को बताओ। वे तुम्हारे साथ आनन्द मनाना और तुम्हें बढ़ने में सहायता करना चाहेंगे।

आगे क्या

पुस्तक 2 में, तुम यीशु को और करीब से जानोगे। तुम बैतलहम की चरनी से लेकर खाली कब्र तक उनके साथ चलोगे, उन्हें आँधियों को शान्त करते, एक बालक के भोजन से हज़ारों को खिलाते, और जब किसी और के पास समय न था तब बच्चों का स्वागत करते हुए देखोगे। तुम यीशु से तब भी मिलोगे जब वे बारह वर्ष के थे।

तब तक, अपनी बाइबल पढ़ते रहो, परमेश्वर से बातें करते रहो और बढ़ते रहो।

यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे;
यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए, और तुझ पर अनुग्रह करे;
यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे, और तुझे शान्ति दे।
— गिनती 6:24-26

यह AI द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसकी किसी मूल भाषी द्वारा समीक्षा होना अभी बाकी है। यह लेखक का मूल पाठ नहीं है।

© Ochorus. युवा पाठकों के लिए लिखी गई Ochorus की मौलिक कृति। इसे निःशुल्क पढ़ें और साझा करें।

यह अनुवाद Ochorus ने तैयार किया है, जो मसीही क्लासिक पुस्तकों का एक निःशुल्क पुस्तकालय है।

Scripture quotations are from the Indian Revised Version (IRV), © 2017–2019 Bridge Connectivity Solutions, licensed under CC BY-SA 4.0 (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/).

इसे ऑनलाइन, निःशुल्क पढ़ें: https://ochorus.com/hi/books/rooted-1/

और निःशुल्क क्लासिक पुस्तकें: ochorus.com